RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 3 अंक 5 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका

जनवरी 2020

पेज संख्या : 36 राजसमंद

नारी

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान

जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

Happy New Year 2020

मोहम्मद आजाद आबिद हुसैन

बीमा सलाहकार

जिन्दगी के साथ भी, जिन्दगी के बाद भी

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

बांडियावाला, कांकरोली
मो. 97844-19801
82099-71007

Tension®

Durgesh Singh Bhati
7230059101

Bhupendra Singh Bhati
8769955630

Manufacture & Wholesaler of jeans, Shirt
& Readymade Garments

999 में 4 शर्ट

999 में 2 जिंस

Shop No. 2, 100ft. Road, In Front of Kawadiya Hospital, Rajsamand (Raj.)
Tel. : 02952-221144 E-mail : tensionjeans1993@gmail.com

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
गणपतसिंह
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स**, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 99500-84705

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

सम्पादकीय

'स्त्री पैदा नहीं होती, उसे बनाया जाता है'

पुरुष प्रधान समाज में नारी की महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता और वर्तमान में महिलाओं की स्थिति को लेकर हमारी सरकारें जागरुक भी हुई है, लेकिन यह जागरुकता सिर्फ दस्तावेजों और कागजी फाइलों तक ही सीमित है। घर हो या बाहर समानता के नाम पर उसे क्या मिलता है- झिल्लत, अपमान और अपने अहं पर चोट।

नारी को विद्यालय में प्रवेश पाने और वोट के लिए ही समान न समझा जाए, ताकि वह किसी भी प्रताड़ना की शिकार न हो सकें। शिक्षा के साथ उसे सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जाए, जिससे वह गली, मोहल्ला, गांव, शहर जहां भी जाए, उसके मन में डर ना हो, सुरक्षित वातावरण के अभाव में ही कई मां- बाप अपनी बेटियों की पढ़ाई या तो बीच में रोक लेते है या जल्द ही उसके हाथ पीले कर देते हैं। यहां पर फ्रेंच लेखिका सीमोनद बाउवर का कथन सटीक लगता है कि ''स्त्री पैदा नहीं होती, उसे बनाया जाता है।'' यह बात भारतीय स्त्री के लिए एकदम सही बैठती है कि बचपन से ही संस्कारों में उसे त्याग, बलिदान, सहनशीलता, प्यार, जीवन अर्पण की बातें, सौगात में मिलती है। ऐसे में यदि उसने जरा भी पुरुषों के बराबर होना चाहा, तो उसे बदतमीज, बदचरित्र की मोहर से नवाजा जाता है, क्यों ?

भारतीय समाज ऐसे में बहुआयामी चिंतन रखता है। एक ओर उसे पूज्या या श्रद्धेया माना जाता है। वहीं दूसरी ओर उपेक्षा, यातना और हवस का शिकार भी स्त्री ही होती है। ये दोहरी स्थितियां तभी समाप्त हो सकती है, जब हम स्त्री को सिर्फ किताबों में नहीं, उसे अपने हृदय और मानस पटल पर भी स्थान दें। उसकी वेदना, उसकी संवेदना के सहभागी बनें। असल में उसकी भावना को समझे।

महिला सशक्तिकरण पर गोष्ठियां तो आयोजित की जाती है, तब तो शब्दों के धनी हमारे प्रधानमंत्री लगातार माताओं- बहनों के सशक्तिकरण के लिए अपनी सरकारों के वादों, इरादों के बाबत इतने कसीदे पढ़ते रहते हैं, लेकिन कहां मौन हो जाते हैं। हमारे प्रधानमंत्री या नेतागण जब हमें पढ़ने और सुनने को मिलता है- महिला उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, भ्रूण हत्या, कहां छिप जाते हैं। इस देश के सारे भले लोग जब किसी बेटी को जिंदा जलाया जाता है, जब किसी बेटी या मासूम की इज्जत से खेला जाता है। इससे तो अच्छा बेटी का कोख में ही मर जाना। एक महिला जब घर चला सकती है, तो देश भी चला सकती है। संसद में महिलाओं का 33 फीसदी आरक्षण बिल 1975 से अटका हुआ है। क्योंकि राजनीति को अपनी जागीर मानने वाले कभी नहीं चाहते कि महिलाओं को को आरक्षण बिल मिलें।

ज्योत्सना पोखरना
साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** कुप्रथा से लड़कर जसोदा बनी एक दिन की मंत्री — पेज- 4
2. **लघु कथाएं :** रफा-दफा और लिटरेरी इनवीटेशन — पेज - 7
3. **वामा विमर्श :** कुछ जलते सवाल — पेज- 8
4. **राजप्रशस्ति महाकाव्य :** द्वितीय व तृतीय सर्ग — पेज- 9
5. **व्यंग्य 1 :** सर्दी में डामरीकरण का सुख — पेज - 10
6. **व्यंग्य 2 :** मैं आग हूं — पेज - 12
7. **महिला कानून :** महिलाओं की संवैधानिक स्थिति — पेज - 14
8. **तीखी मिर्ची** — पेज - 17
9. **महिला परिदृश्य :** महिलाओं की स्थिति चिंताजनक — पेज - 18
10. **राजस्थानी केणावतां** — पेज - 20
11. **महिला संगोष्ठी :** अभी सशक्त नहीं हो पाई महिलाएं — पेज - 21
12. **कविताएं :** उर्मिला का वसंत, पत्र सा बदलाव और कर्म — पेज - 23
13. **राइजिंग अवेयरनेस :** Master your Time — पेज - 26
14. **समसामयिक प्रश्नोत्तरी** — पेज - 27
15. **मेरा गांव मेरे लोग :** पूर्व शिक्षा अधिकारी श्री मोहनलाल पालीवाल — पेज - 30
16. **देववाणी :** गणतंत्रदिवस: — पेज - 32
17. **कविता :** समाज मौन, रोती नारी — पेज - 33
18. **मेवाड़ी चौपाल :** सरेपंच रो चुणाव — पेज - 34

बाल विवाह की कुप्रथा से लड़कर जसोदा एक दिन की बनी महिला मंत्री

जयपुर में राष्ट्रीय बालिका दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में तत्कालीन मंत्री व बाल आयोग अध्यक्ष के साथ जशोदा व अन्य।

बेटी इस तरह नाराज होकर ससुराल से नहीं आती, आज तेरे पिता जीवित होते तो उन्हें कितना दु:ख होता कि मेरी लाडली बेटी जसोदा अपने ससुराल से लड़ाई करके आ गई। तू देख, नहीं मेरी हालत, कैसे मजदूरी करके अपना पेट पाल रही हूं और ऊपर से यह जालिम समाज हमें जीने नहीं देगा। कहां से रुपए के बंदोबस्त करेंगे, कहां से चुकाएंगे तेरा झगड़ा। जीते जी हम दोनों की जिंदगी मौत से बदतर हो जाएगी।

अपनी मां की बातें सुनकर गुस्से से जसोदा बोल पड़ी, तो मां कहीं से लेकर आजा थोड़ा जहर जो खा लेती हूं और तुम्हारी भी इस मुसीबत को हमेशा हमेशा के लिए दूर किए देती हूं। मैं नहीं जानती कि कल क्या होगा ? मगर मैं जीते जी अब उस घर में नहीं जाऊंगी, जिस घर पर मेरे साथ मारपीट होती है, जिस घर में मुझे पढ़ने नहीं दिया जाता।

मेरे साथ जानवरों जैसा सलूक किया जाता है, दिनभर काम करने के बाद भी रात को दर्द ही मिलता है। मैं अब नहीं जाऊंगी, नहीं जाऊंगी, नहीं जाऊंगी...। ज्यादा कुछ कहा तो मैं मर जाऊंगी। इतना कहकर जसोदा रो पड़ी, जब रोना नहीं रुकता देखा, तो मां ने जसोदा को अपने सीने से लगा लिया और उसे ढांढस बंधाया। नहीं जाना है तो मत जा, मैं अब और तुझे उस नर्क की भट्टी में नहीं जलने दूंगी, जो भी होगा देखा जाएगा। यह समाज और यह गरीबी सबसे हम निपट लेंगे। तू चिंता मत कर, कल ही हम कुछ ना कुछ रास्ता निकालेंगे, यह कहकर मां ने उसे ढ़ाढ़स बधाया।

यह सच्ची कहानी है एक अभावग्रस्त जीवन यापन करने वाली जसोदा की। जिसे बचपन में ही शादी करके ससुराल भेज दिया गया और ससुराल वालों ने उसकी पढ़ाई रोक कर उसके साथ बुरा बर्ताव किया तो अपने दम पर अपने बाल विवाह के खिलाफ उठ खड़ी हुई और अपनी मां के जीवन की भी सहायक बनी।

आज जहां हम एक औरत को मां के स्वरूप में देखते हैं, देवी के रूप में पूजते हैं, लेकिन उसकी आज भी समाज में कैसी दयनीय दशा है, उसको भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। औरत की जिंदगी न जाने कितने ही ऐसे रंगों से भरी हुई है, जिसका अंदाजा लगाना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। दु:ख, पीड़ा, लज्जा, मुश्किलें, जिल्लत, आत्म सम्मान, दबाव, लोक लाज और भी न जाने ऐसे कई दंश है, जो वह हर पल अपने आंचल में लेकर चलती रहती है। आज जहां हम भारत को 21वीं सदी की ओर जाते हुए देखते हैं, वहीं पर कई ऐसी कुप्रथाएं आज भी भारत के कई गांवों कस्बों में विद्यमान है, जहां औरतों की स्थिति बद से बद्तर नजर आती है। ऐसी ही कुप्रथाओं में बाल विवाह एक ऐसी कुप्रथा है, जिसमें कई ऐसी नादान बच्चियों की जिंदगी को तबाह कर दिया है।

जयपुर में एक दिन के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्री बनी जसोदा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को स्मार्ट फोन देने के आदेश पर हस्ताक्षर करते हुए।

खेलने खाने की उम्र में ही छोटी नासमझ बच्चियों की शादी कर दी जाती है, ना तो उन्हें शादी का मतलब पता होता है और ना ही अपने जीवनसाथी का। बस एक ही बात की जो रिवाज कई सदियों से चला आ रहा है, उसी को ध्यान में रखते हुए उसे उस बंधन से बांध दिया जाता है, जिसका दंश उसे जिंदगी भर भोगना पड़ता है। इसका मुख्य कारण अशिक्षा और गरीबी है। भारत में आज की स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं है, चाहे वह किसी भी समाज की क्यों नहीं हो, उसे आज भी उसी नजर से देखा जाता है, जो जायज नहीं है।

आज हम बात कर रहे हैं राजसमंद की एक ऐसी लड़की के बारे में जिसका नाम जसोदा है, उसका विवाह मात्र 10 साल की उम्र में ही कर दिया जाता है। वह शादी होकर ससुराल में जाती है, तो उसके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता है, उससे घर के वह सारे काम कराए जाते थे, जो उसकी उम्र के लायक नहीं थे।

एक नादान बच्ची जो इन सबके बारे में कुछ नहीं जानती। फिर भी डर के साए में वह सब कुछ करती रहती है और थोड़ा सा भी गलत होने पर उसे यातनाएं दी जाती है, उसे पीटा जाता है, वह रोती हुई अपनी मां बापू का नाम लेती हुई कहती रहती है कि उसे उनके पास जाना है, लेकिन उसे पुचकारने की बनिस्पत और दंड दिया जाता है, वह कहती है मुझे भूख लग रही है, लेकिन उसे काम न करने का हवाला देकर भूखा रखा जाता है। वह मासूम रोते रोते एक कोने में गठरी बनकर नींद की आगोश में कब चली जाती है, उसे भी पता भी नहीं चलता। सुबह सूर्य उदय से पहले उसे जगा दिया जाता है, तानों और गालियों से उसकी दिनचर्या को अंजाम दिया जाता है। वह कहती है मुझे स्कूल जाना है तो उसकी निर्मल काया को नीम की पतली छड़ी से लाल कर दिया जाता है, वह कुछ भी नहीं समझ पाती। आखिर उसके साथ ऐसा क्यों हो रहा है, रोते-रोते उसकी आंखों से आंसू सूख जाते हैं, उसकी मासूमियत पत्थर की शक्ल में स्थापित होती हुई नजर आती है, बेटी के हाल चाल मां के पूछने पर लड़के के माता पिता द्वारा यही कहा जाता है। आपकी बेटी का हम आप से भी ज्यादा ख्याल रखते हैं।

धीरे- धीरे वक्त निकलता जाता है और जसोदा के पिता की भी मृत्यु हो जाती है, जसोदा की मां अपनी जिंदगी को बहुत ही मुश्किल से चला रही होती है। दो बेटे है, जो पहले से ही अलग होकर अपनी जिंदगी अपनी पत्नी व बच्चों के साथ बिता रहे हैं। इसी बीच उस मासूम की जिंदगी ससुराल में बहुत ही दयनीय स्थिति में आ जाती है। ऐसे में कोई कार्यक्रम होने पर जसोदा अपनी मां के घर आती और अपनी मासूमियत और रूधे गले से रोते रोते उसके साथ जो जो भी उसके ससुराल में उसके साथ घट रहा है, वह सब बताती है और कहती है। अब मुझे वहां नहीं रहना है। मैं वहां नहीं जाऊंगी, गरीब मां यह सब सुनकर गुमसुम हो जाती है, थोड़ा सोचती है और कहती है, बेटी अब तुझे वहीं रहना है। धीरे धीरे सब ठीक हो जाएगा। अब तुम्हारा वही घर है, क्योंकि उसकी मां जानती है कि अगर मैं अपनी लड़की को वापस उसके ससुराल नहीं भेजूंगी तो मुझे समाज के रीति रिवाज के हिसाब से उन्हें झगड़ा (जो एक क्षतिपूर्ति की प्रथा है) उसे देना पड़ेगा और नहीं देने पर समाज के पंचों द्वारा उसे समाज से बहिष्कृत होना पड़ेगा।

इसी डर से वह अपनी बच्ची को वापस बहला फुसलाकर भेज देती है, लेकिन उस मासूम बच्ची जसोदा पर पहले से ज्यादा जुल्म किए जाते हैं, वह अब 15 साल की हो चुकी है। सास ससुर और अपने पति से बहुत ज्यादा प्रताड़ित होने पर वह उस घर से मां के घर चली आती है, बेटी को इस हाल में देखकर मां संभल नहीं पाती, वह गरीब, असहाय कुछ सोच नहीं पाती है। उसे ऐसा लगता है, पता नहीं आगे क्या होगा ?

क्योंकि वह समाज के पंचों द्वारा तुगलकी फरमान को जानती थी, वह यह भी जानती थी कि मुझे और मेरी बेटी को समाज द्वारा जलील किया जाएगा, हमारा जीना मुश्किल हो जाएगा। वह इन सब बातों से बहुत डर गई थी। जसोदा की मां जब महिला मंच संयोजक शकुंतला पामेचा से मिली। बेटी के बारे में रोते रोते अपनी बेटी की दु:ख भरी पूरी कहानी बयां कर दी। फिर संस्था सदस्यों ने लड़की के ससुराल वालों से बात करनी की, मगर वे बात करने को तैयार नहीं हुए। फिर महिला एवं बाल विकास विभाग में भी पहुंची, तो उसे विवाह शून्यीकरण करने के कानून के बारे में पता चला।

इस बीच जसोदा और उसकी मां को बहुत धमकाया गया और कहा गया कि अगर ऐसा नहीं करेंगे, तो उसके नाक कान काट दिए जाएंगे और समाज से बहिष्कृत कर दिया जाएगा, लेकिन मां निडरता के साथ खड़ी रही। क्योंकि उस निडरता में उसका साथ जसोदा दे रही थी। फिर जिला प्रमुख से मिलकर जाति पंचो और परिवार वालों से बात करके इस बात पर सहमति जाहिर कर दी कि ठीक है, कोई लेनदेन किए बगैर ही यह लड़की स्वतंत्र तौर पर अब अपनी मां के साथ रह सकती है, लेकिन कुछ अनिष्ट ना हो उसके लिए पुख्ता प्रमाण की आवश्यकता थी। उसने यह सारी बातें लड़के वालों से एक वकील के द्वारा स्टांप पेपर पर लिखवा कर ले ली कि भविष्य में यह लड़की किसी और से शादी करती है तो इसमें उनकी (ससुराल पक्ष) की कोई आपत्ति नहीं रहेगी। उसके बाद जसोदा ने न्यायालय में विवाह शून्य करने के लिए वाद दायर किया, जहां से विवाह शून्यीकरण हो गया। इसके तहत उसकी मां को उसकी लड़की की शादी में जितना भी खर्च हुआ उसका भी लड़के वालों से भुगतान कराया गया जिसको बैंक में जसोदा के नाम से एफडी करवा कर सुरक्षित कर दिया गया। यह जसोदा के लिए एक विजय का पल था, क्योंकि उसने जो हिम्मत दिखाई वह इस जिले में किसी और लड़की ने नहीं दिखाई, न जाने और भी कई ऐसी लड़कियां थी, जो इस बाल विवाह वाले अभिशाप को भोग रही थी। उनमें भी इस उदाहरण से हिम्मत बंधी, क्योंकि पूरे राजसमंद जिले में यह पहला ऐसा बाल विवाह का मामला था, जो बिना तुगलकी फरमान के जसोदा की हिम्मत की वजह से उसने उस पर विजय पाई।

इसी बीच बाल विवाह पर महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से बाल विवाह पर एक कहानी प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें महिला मंच द्वारा जसोदा की कहानी को भेजा। इस सच्ची बाल विवाह की घटना की कहानी को वहां पर प्रथम पुरस्कार में 25 हजार रुपए की नकदी राशि के साथ मिला और जसोदा को गरिमा अवार्ड से नवाजा गया। वहां पर महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से राष्ट्रीय बालिका दिवस पर विशेष समारोह हुआ। इसके तहत जसोदा को एक दिन का महिला एवं बाल विकास मंत्री

भी बनाया गया है, जिसने एक फाइल पर हस्ताक्षर किए, जिसमें पूरे राजस्थान के आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को स्मार्टफोन बांटे गए। उसे वहां पर अन्य मंत्रियों के बीच मंच पर बुलाया गया और अपनी बात रखने के लिए कहा गया, जब जसोदा मंच पर आई तो सभी ने उसका स्वागत बड़ी गर्मजोशी से किया, उसने अपने भाषण में बाल विवाह एक अभिशाप जो उसने भोगा है, आगे कोई भी लड़की इसको ना भोगे, उस पर बहुत ही अच्छे अपने विचार व्यक्त किए। वहां पर मीडिया भी एकत्रित था, जिससे जसोदा की खबर को प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भी प्रसारित किया। जसोदा यह सब कुछ अपने साथ होता हुआ देखकर आत्मविश्वास से भर गई।

आज जसोदा बालिग हो चुकी है, उसका विवाह भी हो चुका है। वह अपनी मां और पति के साथ अपना सुखमय जीवन यापन कर रही है, अपनी शिक्षा के साथ साथ समाज में जो कुरीतियां चल रही है, उनको खत्म करने के लिए भी समाजसेवा के कार्य कर रही है। आज हमारे समाज में जसोदा जैसी लड़कियों की बहुत जरूरत है, जो समाज में फैल रही कुरीतियों पर जन चेतना के द्वारा उन्हें खत्म करने के लिए निडर और कर्तव्यनिष्ठ होकर कार्य करें, ताकि समाज में और कोई जसोदा प्रताड़ित ना हो हमारा समाज तभी आगे बढ़ पाएगा, जब स्त्रियों की दशा सुधरेगी उन्हें वह सारे अधिकार मिलने चाहिए, जो न्याय संगत हो। आज हम जसोदा को देखकर उन महिलाओं तक भी अपनी बात पहुंचाना चाहते हैं, जो कहीं न कहीं किसी भी परिपेक्ष में किसी भी जाति में किसी भी प्रकार का अत्याचार सह रही है।

राहुल दीक्षित RD
काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली, 9001011755

रफा-दफा

वह पुलिस में दरोगा थे, मामला रफा करने में उनकी कोई सानी नहीं थी। बड़ी ठसक के साथ थाने में कुर्सी पर बैठे थे।

साहब जी हमारे बेटे से गलती हो गई, जवानी के जोश में। सब कह रहे हैं कि बहुत बड़ी दफा लगेगी। एक आदमी ने हाथ जोड़ते हुए कहा- उनके चेहरे पर कुटिल मुस्कान आ गई।

क्या लाए हो? यह यह है, उस आदमी ने खाली हाथ जेब में डाला और भरकर बाहर निकाला।

लड़की पक्ष को आने दो, इज्जत की दुहाई दे मुंह बंद कर देंगे, उन्होंने बेशर्मी से कहा।

और दफा?

उसको हम रफा कर देंगे, उन्होंने बंद मुट्ठी अपनी जेब में घुसाते हुए कहा।

दोनों खुश।

लिटरेरी इनवीटेशन

नीलजी क्यों न साहित्यिक संध्या का आयोजन करा लिया जाए। शाम भी रंगीन हो जाएगी और नाम भी हो जाएगा। ... और बात लेखकों की तो वे तो दौड़े चले आएंगे, श्रीप्रकाश जी ने नील जी से कहा।

हां नेकी और पूछ पूछ। आज ही इंतजाम कराते हैं जनाब। बताइए लिस्ट में कौन कौन से साहित्यकारों को बुलाया जाए, नील जी ने पान चबाते हुए कहा।

हां पिछले मुशायरे में गए थे न, वहां जितनी भी महिला साहित्यकार आईं थी, सभी के नाम नोट कर लीजिए जनाब और हां वो नीली साड़ी पहने जो मोहतरमा थीं उनका ज़रूर। क्या गजब ढा रहीं थीं, श्रीप्रकाश जी ने चटकारे लेते हुए कहा। कौनसी कविता बोली थी उन्होंने? अजी छोड़िए कविता बबिता। हमें क्या करना, श्रीप्रकाश जी ने बेशर्मी से कहा और दोनों ठहाका मारकर जोर से हंसते हुए एक और शाम की रंगीनियत के ख्वाबों में खो गए।

राशि सिंह
मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

कीर ने जयपुर में किया भारतीय खो खो फेडरेशन रेफरी बोर्ड के चैयरमेन का अभिनंदन

राजसमंद. राजस्थान सरकार की ओर से जयपुर में आयोजित राज्य खेलकूद प्रतियोगिता मे मोही के बाबूलाल कीर ने भारतीय खो खो फेडरेशन रेफरी बोर्ड के चैयरमेन डॉ. असगर अली का माल्यार्पण कर स्वागत किया। वही कीर के नेतृत्व में जिले में खो खो के अच्छे खिलाड़ियों को तैयार कर राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व कराने के लिए सराहना की गई। इस अवसर पर राजस्थान खो खो संघ के उपाध्यक्ष भंवरसिंह भाटी, अंतरराष्ट्रीय खो खो खिलाड़ी अशोक कुमार, खो खो कोच कृपाशंकर, दलपतसिंह, नवीन कुमार आदि मौजूद थे।

कुछ जलते सवाल

ताजा खबर हिसार के सरकारी स्कूल की है, जहां 27 छात्राओं ने तीन अध्यापकों पर छेड़छाड़ के आरोप लगाए कि सजा देने के बहाने अध्यापक उनसे छेड़छाड़ करते हैं। ये उन बच्चियों को तब पता चला, जब उन्हें 'गुड टच, बेड टच' की जानकारी दी गई। ये अनभिज्ञ थी, पर जो जानती है, क्या उनके साथ ये नहीं होता। इस प्रश्न के जवाब में सबके मन में आक्रोश उबलता है, होता है, पर आखिर क्यों ?

और ऐसा भी नहीं है कि आर्थिक रूप से कमजोर तबके में लड़कियों को शारीरिक शोषण का शिकार न होना पड़ रहा है। वहां तो यह आम बात है ही। हिसार में ही एक बच्ची के नंबर कम आने पर उसका मुंह काला करके शाला परिसर में घुमाया गया। छोटे शहरों या कस्बों में ही नहीं मुंबई जैसे महानगर में भी इस तरह की घटनाएं अक्सर होती है। मलाड उपनगर में एक जाने माने स्कूल में बस के ड्राइवर ने स्कूल के ही टॉयलेट में एक बच्ची के साथ दुराचार किया और सबसे निष्कृष्ट बात यह है कि उसका साथ वहां की एक महिला कर्मचारी ने दिया। फिर स्कूल की साख बचाने के लिए प्रधानाध्यापिका जो एक स्वयं एक महिला है, चुप रही। अभिभावकों का गुस्सा भड़का। अभी हाल ही में मुंबई के एक आईवी स्कूल में 13-14 साल के लड़कों ने अपनी क्लास की लड़कियों के लिए व्हाट्सएप पर बहुत ही गश्लील भाषा का इस्तेमाल किया। ये दोनों बच्चियां जानी मानी हस्तियों की बेटियां है। जब अभिभावकों का ध्यान गया, शिकायत की, तो उन लड़कों को एक हफ्ते के लिए स्कूल से सस्पेंड कर दिया गया। न जाने कितनी ऐसी शर्मनाक घटनाएं है, जो शूल की तरह चुभती है।

एक लड़की रात को ग्यारह बजे कहीं से आ रही थी, गोरेगांव इलाके में उसके साथ दुराचार का कांड, निर्भया कांड, मुंबई के मंदिर का कांड याद करते ही उनके परिजन सिहर उठते हैं। मां बाप को भी अपने बेटे की इस गंदी करतूत पर सोचने की जरूरत है, जिन्हें बेटियों के साथ हुए क्रूर कृत्य की जरा भी फिक्र नहीं। निर्भया कांड के आरोपी के बयान पढ़कर ये लगता है कि उन्हें अपने किए का जरा भी पछतावा नहीं, क्योंकि उन्हें बचपन में शायद ऐसे संस्कार मिले ही नहीं। हर तथाकथित जनप्रतिनिधि आजम खान या मुलायमसिंह कहते हैं- लड़के हैं, कभी बहक जाते हैं, तो क्यों न ऐसे बहके लड़को को इनके घरों में बहकने की छूट दी जाए। काश! ऐसे असंवेदनशील लोग ये समझ पाते कि जब भी किसी के साथ बलात्कार होता है, वह शारीरिक ही नहीं, मानसिक रूप से यातनाएं भी उसे हमेशा के लिए शिकार बना देती है।

सरकार संविधान के बड़े फैसले बदलने की ताकत रखती है, तो पोर्न साइट्स पर क्यों नहीं नकेल कसती। इंटरनेट मुख्य है, कहीं भी किसी भी वर्ग का व्यक्ति बिना किसी रोक टोक जो चाहे देख सकता है। इस दिशा में कठोर कदम उठाया जाना ही चाहिए। प्राथमिक स्तर से शालाओं में सेल्फ डिफेंस पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। नैतिक शिक्षा के पाठों को अपडेट किया जाए। शारीरिक स्वच्छता के साथ नैतिक स्वच्छता के बारे में भी सिखाई जाए। यह समाज की धारणा भी बदलें कि जहां पुरुष वर्ग स्त्री के साथ दुराचार करें, तब यह क्यों कहा जाए कि इस बेचारी की अस्मत लूट गई। उस पुरुष की भी तो इज्जत गई है, तो मानसिक संताप अकेली बच्ची या महिलाएं ही क्यों भोगे ?

पर सच्चाई यह है- अगर बच्ची या महिला जिंदा है, तो वह और उसके घर वाला पल- पल मरते हैं और हमारे देश का कानून चींटी की चाल चलता है। मानवाधिकार वाले बलात्कारियों को बचाने के लिए खड़े हो जाते हैं। उस वक्त मानव अधिकार कहां चले गए थे, जब वे राक्षस किसी मासूम से जीते जी जीने का हक छीन रहे थे। अगर दो महीने भी छोटा है, तो नाबालिग कहकर बख्श दिया जाता है, क्यों ? ऐसा कृत्य करते हुए तो वह पूरे बालिग हो जाते हैं। निर्भया कांड में उस तथाकथित नाबालिग ने ही सबसे ज्यादा क्रूरता की थी।

अब जरूरत है, फास्ट ट्रैक कोर्ट जो जल्द से जल्द दोषियों को सजा दें। जरूरत है बचपन से अपनी सुरक्षा सीखने की। जरूरत है, बेटों को ये सिखाने की कि एक लड़की भी एक व्यक्ति है। वह केवल वेजाइना नहीं है, एक शरीर ही नहीं है, बल्कि हाड़ मांस के शरीर में उसकी अपनी भी इच्छाएं, आकांक्षाएं है, उसके सपने है। निर्भया डॉक्टर बनने आई थी, पर उसके सपनों को कुचल दिया गया। इसलिए उठो द्रोपदी, हर युग में पांडव जैसे व्यक्ति मिलेंगे, जो तुम्हें दांव पर लगाने का अधिकार तो अपना पौरुषत्व समझते हैं, पर दुशासन, दुर्योधन से बचाने में उनका पौरुषत्व मौन हो जाता है। अब एक द्रोपदी नहीं, कई द्रोपदी है। एक दुशासन नहीं, अनेकों है। कृष्ण भी न जाने कहां व्यस्त है, इसलिए कहती हूं तुमसे--

सुनो, द्रोपदी अब नहीं आएगा कोई कृष्ण
तुम्हें ही उठाने होंगे शस्त्र
तुम्हें ही बनना होग सशक्त
नहीं आएगा अब कोई कृष्ण
आप भी बताएं क्या करें द्रोपदी अब.... ?
निर्भया के आरोपी ने दिया अहिंसा का वास्ता...।
निर्भया की मां- दोषियों के अधिकारों पर इतना विचार क्यों ?
हमारे अधिकारों का क्या ?
प्रश्न निर्भया के साथ जो हुआ क्या वो अहिंसा थी
क्या उसे जीने का हक नहीं था।

अलका अग्रवाल 'सिगतिया'
मुंबई

'राज प्रशस्ति' महाकाव्य

तैलंग पं. रणछोड़ भट्ट का अनुपम शिला शब्द शिल्प

जलदर्पण में निहारता संगमरमरी शब्द सौन्दर्य

द्वितीय सर्ग

'राजप्रशस्ति' की तृतीय शिला में यह सर्ग अंकित किया गया है। भगवान श्रीनाथ का वन्दन करने के साथ महाकाव्यकार पं. रणछोड़ भट्ट ने विष्णु, ब्रम्हा, मरीचि, कश्यप, सूर्य का भी स्मरण कर मेवाड़ के सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन किया गया है। एक 134 राजाओं का वास अयोध्या बताया गया, जबकि 135वें राजा ने अपना शासन दक्षिण भारत में स्थापित कर स्वयं को आदित्य या सूर्यवंशी कहना प्रारम्भ किया। इस शासक का नाम विजय भूप था और आगे चलकर इतिहास में यह विजयादित्य नाम से जाना गया।

अभंग सेन स्तस्मात् तु मद्रसेनस्ततो भवत् ।
भूप:सिंहरथस्त्वेते अयोध्यावासिनो नृपा: ।।35।।

तस्माद् विजय भूपो यं युक्ता योध्यां रणागतान् ।
जित्वानृपान् दक्षिण स्थान वसद्दक्षिण क्षितौ ।।36।।

समग्ररूप में यह सर्ग महाकाव्य की परंपरा में चरित्र नायक राजसिंह की वंशावली का परिचय देता था।

तृतीय सर्ग

'राजप्रशस्ति' की चतुर्थ शिला में तृतीय सर्ग रचना कर उत्कीर्ण किया गया है। पूर्व सर्ग की वंश परंपरा को आगे बढ़ाते हुए रणछोड़ भट्ट सूर्य या आदित्य वंशी राजाओं का नामोल्लेख करते हैं। पदमादित्य, शिवादित्य, हरादित्य, सुजसादित्य, सुमुखादित्य, सोमादित्य, शिलादित्य, केशवादित्य, नागादित्य, भोगादित्य, देवादित्य, आशादित्य, कालभोजादित्य, गृहादित्य (जो गुहिल नाम से इतिहास में जाना गया)– का उल्लेख किया गया है।

ग्रहादित्य सुता: सर्वे गहिलौताभिधायुता: ।
जातायुक्तं तेषु पुत्रो ज्येष्ठो बाप्पाभिधो भवत् ।।06।।

इस क्रम के आगे अगला महत्वपूर्ण राजा वाष्प (बाप्पा) जिससे गहलोत वंश का प्रारंभ हुआ। मेवाड़ के नागदा ग्राम का वासी था। इस सर्ग में बताया गया है कि बाप्पा के गुरू हारित ऋषि थे। इनके आदेश से बाप्पा ने शिव की आराधना की और प्रसन्न होकर भगवान शिव ने चित्रकूट या चित्तौड़गढ़ पर शासन करने का वरदान प्रदान किया। बाप्पा ने माघ शुक्ल सप्तमी वि.सं. 151 को चित्तौड़गढ़ पर अधिकार किया।

इस क्रम में 'राजप्रशस्ति' के लेखक ने बाप्पा के आगे की परम्परा का उल्लेख करते हुए खुम्माण, गोविन्द, महेन्द्र, अल्लट, सिंहवर्मा, शक्ति कुमार, शालीवाहन से लेकर समरसिंह तक के राजाओं का परिचय देकर स्वयं के इतिहासज्ञ होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। समरसिंह के पुत्र कर्णसिंह की परंपरा में उसके दो पुत्रों का इतिहास में विशेष उल्लेख होता है– राहप और माहप। राहप ने पिता के निर्देश से राज्य विस्तार किया और 'राणा' की उपाधि को प्राप्त हुआ। माहप ने डूंगरपुर राज्य पर आधिपत्य स्थापित किया। राहप ने भी अपने पराक्रम से चित्तौड़ पर परचम फहराया।

भाव्याशिवा ब्राम्हणपल्लिवाल जातीयविद्वच्छरशल्य नाम्न।
श्रीचित्रकूटे बललब्ध राज्यं चक्रे ततो राहप एष वीर: ।।
।। 31–34 ।।

राहप के वंशज 'सिसोद'' नामक स्थान पर भी रहे, जिससे वे 'सिसोदिया' कहलाए। मेवाड़ के शासकों को राणा और सिसोदिया होने की पहचान राहप ने ही दी।

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

सर्दी में डामरीकरण का सुख

उधड़ी सड़क और फर्टी शर्ट की हालत एक जैसी होती है। सड़क के गड्ढों से ठेकेदारों की ईमानदारी से बनती सरकार में मंत्री पद की तरह झांकती है। किसान की फटी शर्ट का डामरीकरण नहीं हो सकता। डामरीकरण में वे किसान काम करते हैं, जिनकी प्याज की फसल खराब हो जाती है या वे लोग काम करते हैं, जिनके खाते होते हैं, लेकिन मुआवजे की रकम नहीं आती। डामरीकरण में काम करने में इज्जत खराब नहीं होती। जब शहर के लोग आलीशान वातानुकूलित कमरों में हल्की सर्दी के अहसास में पैग लगा रहे होते हैं। उस समय ये लोग उनके लिए लकदक सड़क बनाने के लिए डामरीकरण में जुटे होते हैं।

किसान को अपनी इज्जत और फसल बहुत प्यारी होती है। दोनों ही मिल जाए तो उसके लिए ईद और दिवाली एक साथ होने जैसा अजूबा हो जाता है। जब किसान की फसल प्याज होते होते बैंगन की हो जाए तो उसे पेट भरने के लिए कद्दू तो उगाना ही पड़ेगो। किसान का कद्दू उगाना यानि सर्दी के मौसम में डामरीकरण में पूरे परिवार का कढ़ाई में छौंका लगाना। डामरीकरण का फायदा काम रात में होना है। रात में मजदूर सोने के अलावा और करता ही क्या है? सोने के लिए बिस्तर, घर और कमरा, रजाई, चाय- वाय सब कुछ चाहिए। चखना- वखना की तो उसकी औकात नहीं होती। डामरीकरण के दौरान ठेकेदार चाय पिला देता है। डामरीकरण और पेट की जलती आग में शरीर को ठंड नहीं लगती। उसे रजाई, बंद कमरे में एसी, पैग के साथ चखने की जरूरत नहीं होती।

रात में कोई नहीं पहचानता। सर्दी में अंगोछा इज्जत भी बचाता है और कद्दू की फसल की गारन्टी भी देता है। किसी आश्वासन की जरूरत नहीं होती, सुबह- सुबह वादे पूरे हो जाते हैं और कद्दू की फसल लहलहा उठती है। किसान फसल के साथ- साथ इज्जत पा खुश हो जाता है। सर्दी में डामरीकरण के सुख से लबालब भर जाता है।

मजदूरों को सर्दी नहीं लगती, सर्दी उनको लगती है जिनके पास रजाई बनाने के लिए पैसे और ओढ़कर सोने के लिए घर होते हैं। काले बूटों से सफेद सड़क को काले डामर से काला करते, बड़ी गाड़ियों के लिए सड़कों पर काजल बिछाते। उस किसान की मां ने भी माथे पे काजल का टीका लगाया था। कहीं किसी साहूकार की नज़र न लग जाए। गाड़ी वालों को किसी फकीर की नजर न लग जाए, इसलिए पूरी सड़क को ही काला किया जाता है।

काली सड़क देखने में भले ही अच्छी ना लगे, लेकिन उस पर नेताओं की दौड़ती काली/ सफेद गाड़ियां अच्छी लगती हैं। कान फाड़ते सायरन मजदूर की फटी शर्ट के छेद से घुसती सर्द हवा की तरह सर्र सर्र गूंजती है। शर्ट आगे से फटी हो या पीछे से फर्क नहीं पड़ता। सर्द हवा को शर्ट में घुसने का रास्ता चाहिए। सरकार में घुसने के लिए पार्टी का फर्क नहीं पड़ता। पार्टी कोई सी हो, सिद्धान्त कोई भी बस घुसने का मौका चाहिए।

कुछ भी हो सुख ही सुख नज़र आता है। वाहियात तो वो लोग होते हैं, जो डामरीकरण में दु:ख देखते हैं। डामरीकरण किसान और मजदूर की खुशी का कारण है। वह ठंड से बच जाता है, रात को काम कर अधिक कमा लेता है। इस कमाई से वह कल्पना कर लेता है, एक न एक दिन डामर मंत्री बन जाएगा। चुनाव से पहले जान लें। डामरीकरण के पहले सड़क कितनी बदसूरत थी। पांचवे साल में

सड़क कितनी सुन्दर हो जाती है। सड़क बनाने से किसान खुश होता है। किसान की खुशी का कारण एक न एक दिन उसके गांव की सड़क भी बनेगी। नेता खुश, व्यापारी खुश, फुटपाथ पर सोने वाले खुश होते हैं। नेताजी का आश्वासन याद कर खुश होता है। उन्होंने कहा था एक दिन गरम बिस्तर पर सोएं।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

पोस्टर पर चिपके विधायक से उम्मीद करते हैं, सपना पूरा हो जाए, जिसकी शक्ल पोस्टर पर विकास कार्य के शुरू होने की तो सूचना देती है, लेकिन समाप्त होने की नहीं। काली सड़क पर काली रात में काले सूट- बूट में गाते फिरते हैं। साला मैं तो साहब बन गया। वे सूटबूट नहीं पहनेंगे। सड़क पर नहीं घूमेंगे तो दिनभर की कमाई की नुमाइश कैसे कर पाएंगे। डामरीकरण में लगी किसान की बीवी को देखकर खुश होते हैं, कोशिश करते हैं, कोई रात गरम कर दें।

सड़क भी खुश है। उसकी खुशी देखते ही बनती है। उसकी आंखों से कोयले के आंसू बह रहे हैं, जिनको पोंछने से भी मुंह काला ही होता है। आंसू खुशी के हों या दुख के वे जब भी निकलते हैं। चेहरे की गंदगी के बीच आकाशगंगा की तरह साफ चमकते हैं। सड़क बनने से सभी खुश हैं। लेखक खुश हैं। अपनी कलम को धन्य मान लेते हैं। नेता खुश, सड़क में वोट रूपी गढ़ कुन्ढार का खजाना नज़र आ रहा है।

सड़क अच्छी, पार्किंग अच्छी, पार्किंग में धूल से अटी गाड़ी खुश। ठेले वाले खुश, खोमचे वाले खुश, कुल मिलाकर सभी खुश हैं। सर्दी में डामरीकरण से, किसी के लिए कद्दू का इंतजाम, किसी की विधायकी पक्की, किसी के लिए फटी शर्ट से चमकती नई शर्ट की आशा चमकती, कागज के कप में आधा कप चाय, एक साड़ी में लिपटी झुनिया और कमर से चिपका गोबर भी साहब की उतरन से खुश हैं।

डामर की सड़क सुख का सागर है। ओढ़ों मत बिछाओं और उससे गुजरती अर्थियों और रईसों की बारात देख खुश हो जाओ और दूसरों को भी खुश होने दो। खुश होना है तो सर्दी में सड़क बनवाओं, लेकिन ध्यान रहे असली खुशी, तब ही मिलेगी, जब पांचवें साल में बनेगी सड़क।

ठंड चरम पर हैं। सड़के बन रही हैं, कहीं लोग सरकारी सम्पति को जलाकर हाथ सेक रहे हैं, कहीं अखबारों की गरम खबरों पर सोकर मंदी की गरमाहट पा रहे हैं। कुछ लोग इन आग की लपटों में सत्ता खोज रहे हैं, तो कुछ कद्दू की फसल। सड़क बेखबर है, इन खबरों से, किसी की खुशी से तो किसी के गम से।

सुनील जैन 'राही'
मो. 9810960285

लोकप्रिय
जयवर्द्धन
से जुड़ने का सुनहरा अवसर
आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधि जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।
भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

मैं आग हूं

जी हां, मैं आग हूं। वही आग जिसकी खोज आपके पूर्वजों ने लाखों वर्ष पहले की थी। मेरा उद्भव टकराहट से हुआ था, यह तो आप लोगों ने अपनी इतिहास की किताब में पढ़ा ही होगा। मेरे जन्म के साथ ही आरंभ हुआ था मानव का मानव होना। मेरी इस बात से तो आप लोग भी इत्तेफाक रखते होंगे कि अगर मैं नहीं होती तो आज मानव भी जानवरों की तरह सबकुछ कच्चा ही खा रहा होता। गरमागरम कॉफी और लजीज बर्गर के दर्शन की बात छोड़ो इनकी कल्पना भी नहीं कर पाते क्योंकि जिससे कभी संपर्क होता है, वही खयाल में भी आता है।

मैं आग हूं और मेरा मूल धर्म है, जलना तथा जलाना। जलने तथा जलाने से मतलब ईर्ष्या से मत लगाइएगा, वह काम तो मनुष्यों का है मेरा नहीं। क्योंकि ईर्ष्या कमजोर अपने से शक्तिशाली से करते हैं और मैं तो सबसे अधिक ताकतवर हूं। प्रहलाद और सीताजी के अलावा मैंने शायद ही किसी को छोड़ा हो। मैं अपने आदिकाल से अभी तक हूं और आगे भी रहना है, क्योंकि मेरे बिना इस संसार का वजूद ही नहीं रहेगा। मैं मानव जीवन में इस कदर समाई हुई हूं कि अलग करना नामुमकिन है। मुझे साक्षी मानकर ही सात फेरे लेते हो, मृत शरीर को पंचतत्व में मैं ही विलीन करती हूं। यज्ञ हो या सत्यनारायण की कथा हो, उसमें जो पंजीरी फांकते हो, उसमें भी मेरा श्रममांश समाया है। मजारों की अगरबत्ती से लेकर मंदिरों के दीयों तक प्रज्ज्वलित करने में मेरा ही हाथ है। मैं सभी की हूं और सभी मेरे हैं। इसीलिए तो चुड़ई वाले अग्नि तथा आग, टोपी वाले आतिश और हैट वाले फायर कहते हैं, परंतु मैं जब विकराल रूप धारण करती हूं, तो किसी को नहीं छोड़ती। मैं धर्मनिरपेक्ष, पंथनिरपेक्ष, सामाजिकता वाले संवैधानिक मार्ग की अनुगामी हूं।

मैं आग हूं। मेरे कई रूप हैं, कहीं दावानल हूं, तो कहीं बडवाग्नि हूं, कहीं जठराग्नि हूं, तो कहीं क्रोधाग्नि हूं। जब मैं पेट में जलती हूं, तो नीतियों को लोग मुखाग्नि दे देते हैं। पेटानल बुझाने के लिए कुछ भी करने को विवश हो जाते हैं। मुझे बुझाने के लिए लोग रातों की नींद निसार कर देते हैं, दिन का चैन वार देते हैं। इसी प्रकार जब भगवान श्री राम के हृदय में क्रोधाग्नि जली, तो रावण जैसे महाबली को तिनके के समान जलाकर राख कर दिया।

मैं आग हूं। वही आग जिस पर गरीब अपने आलू भूनता है और बाटियां सेंकता है। वही आग जिस पर अमीर का पिज्जा सिकता है। वही आग हूं जो अकबर के महल के दीप में थी, जिसके सहारे जाड़े की रात काटने की बात जहांपनाह कर रहे थे। वही आग हूं, जिसे बीरबल ने बांस पर टंगी हांडी के नीचे जलाकर तनाशाही को सबक सिखाया था। वही आग हूं, जिसने आतंकित वीरांगनाओं को अपनी गोद में लेकर उनके जौहर व्रत को सफल बनाया। वही आग हूं, जो जब सीने में जलती है तो देश को आजादी मिल जाती है। वही आग हूं, जो तोपों के मुंह से गोले के रूप में निकलकर दुश्मनों से मातृभूमि की रक्षा करती है।

मैं आग हूं। वही आग हूं, जो विरोध के रूप में लगाई जाती है। उसे लगाने वाले यह भी नहीं सोचते हैं कि इससे हमारा भी नुकसान हो सकता है, लेकिन इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। मैं बिल्कुल निर्दोष हूं। मैं अपना काम करती हूं। मुझे जलाने वाले की नियति पर निर्भर करता है कि विकास होगा या विनाश होगा। जब मेरी भयंकर लपटें उठती हैं तो निष्पक्ष रहती हैं, उन्हें इसकी भी चिंता नहीं कि कौन जलाया और कौन जल रहा है।

जी सही पहचाने, मैं आग हूं। वही आग जो सर्दी भगाने में सहायक है। चौराहे हों या घर हों सभी जगह जल रही हूं। खादी अपनी रोटियां सेंक रही है और ठंड से कांपते हाथ थोड़ी देर ठहरकर अपने को गरम कर रहे हैं। धूं- धूंकर जलती गाड़ियों और बसों के पीछे मेरा ही योगदान है, पर मैं मजबूर हूं, बिल्कुल पुलिस की तरह जो ऑर्डर की गुलाम है। अपना इतना परिचय देने के बाद मुझे जगाने वालों से एक ही निवेदन है कि आग जलाइए पर ठंड भगाने के लिए, शांति- सौहार्द फूंकने के लिए नहीं।

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट (उत्तरप्रदेश) मो. 86041-12963

कीर समाज ने मनाई वीरांगना पुरी बाई जयंती

राजसमंद. मेवाड़ मे कीर समाज की अद्भुभ व अदम्य साहस एवं वीरता की धनी पुरी बाई की जन्म जयंती कीर की चौकी गांव में हर्षोल्लास के साथ मनाई। शिक्षाविद कोमलसिहं कीर वानिया मध्यप्रदेश ने कहा कि कीर समाज के लिए यह बहुत ही गर्व और गौरव की बात है कि मां पूरी बाई कीर ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने साहस शौर्य हिम्मत और ताकत से जो काम किया था, उसका ही पारितोषक था कि उनको तात्कालिक समय में वीरांगना पुरी बाई का खिताब दिया गया। सकल कीर समाज वर्तमान पीढ़ी से विशेषकर युवाओं से ये आव्हान करती है कि यथा शक्ति शिक्षा ग्रहण कीजिए, ताकि समाज को विकास की मुख्यधारा में शामिल कर सकें। अपने शरीर को ताकतवर और स्वस्थ बनाइए, ताकि हम किसी तरह के शोषण के शिकार न हो सकें। कीर समाज की वीरागंना मां पुरी बाई कीर की साहस एवं वीरता से क़ायल होकर उदयपुर मेवाड़ के महाराणा ने क्षेत्र में कर वसूल करने का ज़िम्मा सौंपा गया था। कहा जाता है। कि मां पुरी बाई से डकैती करने वाले गिरोह भी कांपते थे। इसीलिए इस गांव का नाम भी कीर की चौकी पड़ा।

जयवर्द्धन के स्तंभकार का यूपी सरकार ने किया सम्मान

उत्तर प्रदेश के चित्रकूट के हिन्दी विभाग के प्रवक्ता पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू' को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में मार्स ऑडिटोरियम इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान विभूति खंड गोमती नगर में 3 दिसम्बर 2019 को आयोजित समारोह में दिव्यांगजन सशक्तिकरण मंत्री अनिल राजभर द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार का पुरस्कार प्रदान किया। उन्हें यह पुरस्कार विषम शारीरिक परिस्थितियों के बावजूद उत्कृष्ट सृजनशीलता के लिए दिया गया। पीयूष सेरेब्रल पल्सी (प्रमस्तिकीय पक्षाघात) ग्रस्त हैं, जिसके कारण उनका कहना पूरा शरीर कंपन करता है तथा ह्वील चेयर पर रहते हैं। इतनी विपरीत परिस्थितियों के रहते हुए भी अब तक हिन्दी साहित्य की चार पुस्तकें तथा बीस संयुक्त काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनके गीत, ग़जल, कविताएं भारत समेत सात देशों की प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं और **जयवर्द्धन पत्रिका** में लगभग एक साल से व्यंग्य स्तम्भ के अंतर्गत उनके लेख नियमित प्रकाशित हो रहे हैं। इतना ही नहीं भारत के छह राज्यों के कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ कर चुके हैं। इस पुरस्कार से पहले पीयूष को महाराष्ट्र से संस्कार भूषण, कनाडा की साहित्यिक संस्था का सहयोग सम्मान समेत करीब दो दर्जन पुरस्कार और सम्मान विभिन्न साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा दिए जा चुके हैं। द्विवेदी इन दिनों हिन्दी साहित्य में विकलांग विमर्श विषय पर शोध कार्य भी कर रहे हैं । पीयूष का कहना है कि बचपन से ही उन्हें लेखन के प्रति विशेष रूचि रही है। अपनी शिक्षा के दौरान धीरे धीरे उनकी रुचि साहित्य जगत में बढ़ती गई। साहित्य एवं लेखन कार्य के प्रति विशेष रुचि के चलते वे आज एक प्रतिष्ठित युवा साहित्यकार में गिने जाते हैं।

महिलाओं की संवैधानिक स्थिति

महिलाएं समाज का एक सशक्त अंग है। उसका अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है। शास्त्रों में तो यहां तक कहा गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यनते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवता वास करते हैं। ऐसा कोई सामाजिक अथवा धार्मिक समारोह नही जो नारी के बिना सम्पन्न हो सकता है। बीच में कुछ समय ऐसा आया, जब नारी को केवल भोग विलास की वस्तु समझा जाने लगा। वह पुरुष की यातना एवं शोषण का शिकार बनी, लेकिन यह स्थिति लंबे समय तक नहीं चली। देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुरुप कानून बदला। नारी को अनेक महत्त्वपूर्ण अधिकार दिए गए। उन्हें संविधान का संरक्षण मिला। अब नारी को अबला नहीं कहा जा सकता। उसे पुरुष के समान दर्जा मिला। आज नारी सबला और सशक्त है।

लिंग-भेद का निषेध :

हमारा संविधान लिंग भेद को निषेध करता है अर्थात् वह पुरुष एवं स्त्री के बीच कोई भेदभाव नहीं करता है। अनुच्छेद 15(1) में यह कहा गया है- ''राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग जन्म स्थान व इनमें से किसी के आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा।'' अनुच्छेद 15 नारी को पुरुष के समान दर्जा प्रदान करता है। मात्र लिंग के आधार पर पुरुष एवं स्त्री में विभेद नहीं किया जा सकता।

श्रीमती ए. क्रेकनेल बनाम स्टेट (ए.आई.आर. 1952 इलाहाबाद 746) के मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा यह प्रतिपादित किया गया है कि किसी महिला को मात्र स्त्री होने के कारण सम्पत्ति धारण करने, उसका उपयोग उपभोग करने अथवा व्ययन करने से वंचित नहीं किया जा सकता।

डॉ. नूरजहां सेफिया नियाज बनाम स्टेट ऑफ महाराष्ट्र (ए.आई.आर. 2017 एन.ओ.सी. 45 मुम्बई) के मामले में मुंबई उच्च न्यायालय द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया है कि 'किसी दरगाह में मुस्लिम महिलाओं को मात्र महिला होने के कारण प्रवेश से वंचित नहीं किया जा सकता है।' महिलाओं के लिए हमारे संविधान का यह एक बहुत बड़ा उपहार है।

नियोजन में अवसर की समानता :

संविधान का अनुच्छेद 16 लोक नियोजन में महिलाओं को पुरुष के समान अवसर प्रदान करता है। अनुच्छेद 16 (2) में यह कहा गया है कि ''राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति के संबंध में केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, उद्भव, जन्म स्थान, निवास या इनमें से किसी के आधार पर विभेद नहीं किया जाएगा।'' कामकाजी महिलाओं के लिए संविधान का यह दूसरा महत्त्वपूर्ण उपहार है।

इतना ही नहीं, अनुच्छेद 39 (घ) में तो यहां तक कहा गया है कि ''पुरुष एवं स्त्रियों दोनों के लिए समान कार्य के लिए समान वेतन होगा।'' समान कार्य के लिए समान वेतन की अवधारणा पुरुष एवं स्त्रियों के बीच विभेद को समाप्त करने वाली एक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है।

उत्तराखंड महिला कल्याण परिषद बनाम स्टेट ऑफ उत्तरप्रदेश (ए.आई.आर. 1992 एस.सी. 1995) के मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा यह प्रतिपादित किया गया है कि समान कार्य के लिए महिला शिक्षकों को पुरुष शिक्षकों से कम वेतन दिया जाना असंवैधानिक है। लोक नियोजन में अवसर की समानता का प्रभाव यह हुआ कि महिलाएं घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर कर्म क्षेत्र में आने लगी है।

सत्ता में भागीदारी :

संविधान का अनुच्छेद 243 घ (3) सत्ता में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करता है। संविधान के 73वें संशोधन अधिनियम 1992 द्वारा संविधान में यह व्यवस्था की गई है कि पंचायतीराज संस्थाओं में स्त्रियों के लिए एक तिहाई स्थान आरक्षित होंगे। ठीक ऐसी ही व्यवस्था संविधान के 74वें संशोधन अधिनियम 1992 द्वारा

नगरपालिकाओं के लिए की गई है। अनुच्छेद 243 न (3) में नगर पालिकाओं में एक तिहाई स्थान स्त्रियों के लिए आरक्षित किए गए हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि आज महिलाएं पंचायतीराज संस्थाओं व नगरपालिकाओं में निर्वाचित होने लगी है। उन्हें सत्ता में भागीदारी का अवसर मिला है।

मातृत्व लाभ :

कामकाजी महिलाओं के लिए मातृत्व लाभ (प्रसूति प्रलाभ) की एक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है। संसद द्वारा सन् 1961 में मातृत्व लाभ (प्रसूति प्रलाभ) अधिनियम पारित किया गया और उसमें कामकाजी महिलाओं के लिए 12 सप्ताह के प्रसूति प्रलाभ का प्रावधान किया गया। कालान्तर में प्रसूति प्रलाभ (संशोधन अधिनियम 2017) द्वारा यह अवधि बढ़ाकर 26 सप्ताह कर दी गई। इस प्रकार अब कामकाजी महिलाएं 26 सप्ताह का प्रसूति प्रलाभ प्राप्त करने की हकदार हो गई है।

इतना ही नहीं म्युनिसिपल कॉरपोरेशन ऑफ दिल्ली बनाम वीमेन्स वकर्स मस्टररोल (ए.आई.आर. 2000 एस.सी. 1274) के मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा यहां तक कहा गया कि प्रसूति प्रलाभ का लाभ ऐसी कामकाजी महिलाओं को भी मिलना चाहिए, जिन पर प्रसूति प्रलाभ अधिनियम 1961 लागू नहीं होता है। कामकाजी महिलाओं को शक्ति एवं सम्बल प्रदान करने वाला यह एक महत्त्वपूर्ण निर्णय है।

तीन तलाक से निजात :

मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक से निजात इस दशक का एक महत्त्वपूर्ण उपहार है। तीन तलाक अर्थात् तलाक- उल विद्दत अत्यंत पीड़ावह तलाक है। इसमें पति कभी भी ''मैं तुम्हें तलाक देता हूं'' शब्दों का तीन बार उच्चारण करके अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। यह तत्काल अविखण्डनीय हो जाता है। अनेक निर्दोष महिलाएं इस तलाक का शिकार हो जाती है और उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। कुरान में ऐसे तलाक को निरुत्साहित किया गया है।

सायरा बानो बनाम युनियन ऑन इंडिया (ए.आई.आर. 2017 एस.सी. 4609) के मामले में तीन तलाक को चुनौती दी गई। उच्चतम न्यायालय ने तीन तलाक अर्थात् तलाक-उल-विद्दत को अवैध एवं असंवैधानिक घोषित करते हुए कहा कि यह मनमाना एवं एक तरफा है। कुरान में इसे प्रोत्साहित नहीं किया गया है।

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के **जयवर्द्धन पत्रिका** की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद/ तलाक पर अधिकारों का संरक्षण) संशोधन अधिनियम 2019 द्वारातीन तलाक को तीन वर्ष तक की अवधि के कारावास से दण्डनीय अपराध घोषित किया गया है। इस प्रकार इस ऐतिहासिक निर्णय से मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक की पीड़ा से निजात मिल गई है।

महिला यौन उत्पीड़न से संरक्षण :

वर्तमान औद्योगिक युग में कामकाजी महिलाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। उनमें काम करने का हौंसला भी बढ़ा है। लेकिन उनके समक्ष यौन उत्पीड़न का संकट मंडराने लगा है। कामकाजी महिलाएं कार्य स्थल पर अपने आपकों सुरक्षित नहीं मानती है।

विशाखा बनाम स्टेट ऑफ राजस्थान (ए.आई.आर. 1997 एस.सी. 3011) के मामले में प्रथम बार कामकाजी महिलाओं के यौन उत्पीड़न के निवारण के लिए उच्चतम न्यायालय द्वारा दिशा निर्देश जारी किए गए और विधायिका को उचित विधान बनाने का निर्देश दिया गया। परिणामस्वरुप कार्य स्थल पर महिलाओं का लैंगिक उत्पीड़न (निवारण प्रतिषेध और प्रतितोष) अधिनियम 2013 पारित किया गया। धारा 26 में इसके लिए शास्ति का प्रावधान किया गया है।

कामकाजी महिलाओं से यौन संबंध स्थापित करने का प्रयास करना, यौन संबंध बनाने की याचना करना, कामोत्तेजक चित्रो का प्रदर्शन करना, अश्लील टिप्पणीयां एवं कृत्य करना तथा अन्य अशोभनीय कृत्य करना आदि यौन उत्पीड़न के उदाहरण है।

घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण :

महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा आज की एक विकट समस्या है। प्रतिदिन घरेलू हिंसा के समाचार पढ़ने को मिलते हैं। महिलाएं अधिकांशतया अपने ही घर में शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और लैंगिक दुर्व्यहार का शिकार होती है। उन्हें साझा गृहस्थी से अलग कर दिया जाता है। उन्हें शारीरिक, मानसिक एवं भावानात्मक यातनाएं दी जाती है। ऐसी महिलाओं को घरेलू हिंसा से निजात दिलाने के लिए घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 पारित किया गया।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

इसके अन्तर्गत प्रथम वर्ग न्यायिक मजिस्ट्रेट को परिवादों की सुनवार्प करने की अधिकारिता प्रदान की गई है तथा मजिस्ट्रेट के आदेश की अवहेलना के लिए धारा 31 में एक वर्ष तक की अवधि के कारावास अथवा बीस हजार रुपए के जुर्माने या दोनों से दण्डित किए जाने की व्यवस्था की गई है। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को घरेलू हिंसा से निजात दिलाना है।

महिलाओं के देह प्रदर्शन पर रोक :

किसी न किसी माध्यम से नारी का देह प्रदर्शन आज एक आम बात हो गई है। विज्ञापन हो या सौन्दर्य प्रतियोगिता, नारी शरीर का खुलकर अशिष्ट रूपण किया जाता है।

चन्द्रा राजकुमारी बनाम कमिश्नर ऑफ पुलिस हैदराबाद (ए.आई.आर. 1998 आंध्रप्रदेश 3021) के मामले में देर रात तक चलने वाली सौन्दर्य प्रतियोगिता के माध्यम से नारी के अशिष्ट देह प्रदर्शन को चुनौती दी गई। आंध्रप्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा यह कहा गया कि ''नारी एक व्यक्ति ही नहीं, अपितु एक शक्ति भी है। उसका नारीत्व मां की ममता के रूप में छलकता है। उसके सौन्दर्य का प्रदर्शन बुरा नहीं है। क्योंकि सौन्दर्य प्रदर्शन की वस्तु है, लेकिन उसका अशिष्ट एवं अर्द्ध नग्न अवस्था में प्रदर्शन दण्डनीय अपराध है।'' उच्च न्यचायालय ने सौन्दर्य प्रतियोगिता के संचालन बाबत आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए। नारी के अशिष्ट रूपण को रोकने के लिए सन् 1986 में ''महिलाओं का अशिष्ट रूपण (निषेध) अधिनियम'' पारित किया गया, जिसमें नारी के अशिष्ट रूपण को दण्डनीय अपराध घोषित किया गया है।

लैंगिक अपराधों से संरक्षण :

महिलाओं के विरुद्ध कारित होने वाले अपराधों में सर्वाधिक घृणित एवं गंभीर अपराधा लैंगिक अपराध है। जैसे स्त्री की लज्जा भंग, बलात्संग, अप्राकृतिक मैथुन आदि।

किसी स्त्री की इच्छा के विरुद्ध एवं सहमति के बिना किए जाने वाला लैंगिक संभोग बलात्संग है। पिछले कुछ वर्षों से कम आयु की बालिकाओं के साथ बलात्संग की घटनाएं बढ़ने लगी है। इसे दृष्टिगत रखते हुए दंड विधि (संशोधन) अधिनियम 2018 द्वारा 12 वर्ष से कम आयु की बालिका के साथ बलात्संग किए जाने पर मृत्युदंड का प्रावधान किया गया है।

किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध किया जाने वाला गुदा मैथुन, मुख मैथुन आदि अप्राकृतिक मैथुन कहलाता है। भारतीय दण्ड संहिता 1860 की धारा 377 में इसके लिए कठोर दण्ड का प्रावधान किया गया है। किसी स्त्री की लज्जा भंग करने के आशय से उस पर हमला करना या आपराधिक बल का प्रयोग करना स्त्री की लज्जा भंग कहलाता है। जैसे किसी स्त्री को पकड़ लेना, उसे निर्वस्त्र कर देना, उसके स्तन दबाना, साड़ी या पेटीकोट हटा देना, नीचे गिरा देना, अश्लील हरकते करना, उसके कूल्हे पर मारना आदि। भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 354, 354 क, धारा 354 ख, धारा 354 ग एवं धारा 354 घ में उसके लिए कठोर दंड की व्यवस्था की गई है। दंड विधि (संशोधन) अधिनियम 2013 द्वारा संशोधन कर स्त्री का पीछा करने, उस पर अश्लील टिप्पणियां करने, उसकी एकान्तता भंग करने आदि को दंडनीय अपराध बना दिया गया है।

सम्पति में महिलाओं का हक :

हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 की धारा 6 एवं 14 में महिह्लाओं को सम्पत्ति में महत्त्वपूर्ण अधिकार प्रदान किया गया है। हिन्दू उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम 2005 द्वारा अब पुरुष की तरह स्त्रियों को भी पैतृक सम्पत्ति में जन्मत: अधिकार प्रदान कर दिया गया है। अर्थात् पुत्रियों को भी पैतृक सम्पत्ति में पुत्र के समान अंश पाने का हकदार मान लिया गया है। इसी प्रकार धारा 14 में स्त्रीधन को पूर्ण मान्यता प्रदान कर दी गई है। धारा 14 के अनुसार महिलाएं अपने कब्जे में की सम्पत्ति की पूर्ण हकदार होगी। अर्थात् उस पर उनका पूर्ण स्वामित्व होगा। चाहे ऐसी सम्पत्ति कन्यादान, उपहार, उत्तराधिकार, भरण पोषण आदि किसी भी रूप से मिली है। इस प्रकार अब वैधानिक एवं संवैधानिक दृष्टि से महिलाएं पूर्णतया सुरक्षित एवं सशक्त है।

डॉ. बसन्तीलाल बाबेल
पूर्व न्यायाधीश एवं शासन उप सचिव
राजस्थान सरकार

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

चुनावी उत्सव

विजय शर्मा @ राजसमंद
94142-39648

आजकल हर गांव में बड़े उत्सव सी मौज उड़ रही है। कहने को मल मास में शुभकार्य नहीं होते हैं, मगर राजनीति का महोत्सव मलमास में भी अपने उफान पर है। चुनावी ढोल की थाप पर मुफ्त की शराब के हल्के नशे में आम आदमी अपने पैर को थिरकने से नहीं रोक पाता है। हर गली मोहल्ले में देर रात तक चुनावी उत्सव के आनंद लिए जा रहे हैं। गली के मुहाने पर नए नए नेताओं के बैनर लगे हैं, जिसमें सामान्यतया काला कलूठा दिखने वाला नेता भी साफ सूथरी शक्ल में पेश होता है। बैनर पर लिखे सेवाभावी, कर्मठ और ईमानदार शब्द पढ़कर आम जनता एक प्रेमिका की भांति अपने सपनों का राजकुमार तलाश करती है। गांव के आम लोग किसान मजदूर अपने कार्य स्थल पर भी चुनावी चर्चा में मशगुल रहते हैं और सांझ होते ही सभी चौराहों पर अलाव के पास बैठकर नेताओं के वादों और जुमलों पर चटकारें लेते हैं। चुनाव से पूर्व का यह एक पखवाड़ा ही तो जनता की मौज का होता है, जब सभी नेता हर गरीब के घर जाकर उसका हालचाल पूछते हैं, वरना बाकी के पांच साल तो जनप्रतिनिधि को ढूंढने में ही निकल जाते हैं।

पंचायत चुनाव का अपना अलग ही आनंद है। इसमें ज्यादातर नए चेहरे मैदान में दिखाई देते हैं, जो नए जोश के साथ फिल्मी स्टाइल में जादूई परिवर्तन के कुछ जुमलों के साथ ताल ठोकते नजर आते हैं। कुछ चेहरे अपनी पीढ़ी दर पीढ़ी की राजनैतिक दुकान पर नए मालिक बनकर जनता के सामने उपस्थित होते हैं। वहीं कुछ लोग किसी नेता से अपनी निजी द्वेषता के कारण भी विरोध प्रदर्शन के लिए चुनावी दंगल का हिस्सा बन जाते हैं। लगभग सभी नेता अपनी जीत के प्रति आश्वस्त होते हैं और इन सभी नेताओं के अपनी जीत के समीकरण भी भिन्न भिन्न होते हैं।

चुनाव प्रचार के दौरान नेताओं को अपने चेहरे पर एक मासूम मुस्कुराहट चढ़ाकर रखनी पड़ती हैं। हर एक के सामने नतमस्तक होकर उसकी बात सुननी पड़ती हैं। जिन्हें सरकारी योजनाओं के फायदें नहीं मिल पाए, वो अपनी कहानी सुनाता है। किसी की पेंशन चालू नहीं हुई तो किसी को शौचालय का चेक नहीं मिला, किसी को मकान का पट्टा चाहिए, तो किसी को गली में पक्की सड़क बनवानी है। नेताजी इस प्रचार के दौरान सभी को आश्वासन की मिठी गोली देकर अपना वोट पक्का करने में लगे रहते हैं, मगर दिनभर अनेक लोगों को किए गए वादे नेताजी चुनाव तक कहा याद रखते हैं, वो तो शाम तक ही भूल जाते हैं।

वहीं कुछ लोग नेताओं की तरह ही अवसरवादी होते हैं, जिस तरह नेता अपने वादे से मुकर जाते हैं और हर काम पर आम आदमी से वसूली करते हैं। ठीक उसी तर्ज पर 'आज खाया वो अपना' के सिद्धान्त वाले वोटर अपने वोट की कीमत तय करके अपनी जेब गरम कर लेते हैं।

कहीं शराब के नशे में वोटर का वोट खो जाता है, तो कहीं गरमागरम दूध की गरमी से पिघलकर वोट खिसक जाता है। अवैध शराब व पैसे के वितरण पर रोक लगाने वाले नियमों के कागज भी मोड़कर रोल बनाकर बैग में रुपए तले दबकर रह जाते हैं। चुनाव की शुरुआत जुझारू, सेवाभावी, कर्मठ और ईमानदार नेता के पोस्टर से होती है, मगर वही कर्मठ नेता चुनाव की आखिरी में रात भर शराब व पैसे बांटकर अपनी ईमानदारी व सेवाभाव का परिचय देता है। वोटिंग से पहले जनता के सामने नाक रगड़ने वाले नेता को सरपंच निर्वाचन के बाद जीत के जुलूस में लोग अपने को सिर पर बिठा देते हैं, जो पांच वर्ष तक जनता के कंधों पर ही काबिज रहता है।

महिलाओं की स्थिति चिंताजनक

महिला सशक्तिकरण पर राजसमंद महिला मंच संगठन के रूप में वर्ष 1998 से गरीब, पीड़ित, शोषित एवं वंचित महिलाओं के साथ काम कर रहा है व राजसमंद जन विकास संसथान के साथ जिले में वर्ष 2003 से कार्य किया जा रहा है। कार्य करने के दौरान कई महिलाओं की कई तरह की पीड़ा सुनी और उनको जागरुक करके विभिनन प्रकार की सरकारी योजनाओं से लाभान्वित करते हुए उनको हिंसा और शोषण से मुक्ति दिलाई। उसके बावजूद भी जिले में महिलाओं की हालात बहुत अच्छे नहीं है। हालांकि 1998 से 2019 तक की स्थिति देखे तो बालिका शिक्षा का स्तर पहले से बढ़ा है। बाल विवाह में भी कमी आई है, लेकिन पीछे खींचती प्रथाएं महिलाओं और बालिकाओं को आगे बढ़ने से रोक देती है। क्योंकि भारतीय संस्कृति और सामाजिक सरोकार से जुड़े कई ऐसे तथ्य सामने आ जाते हैं, जो उसकी अन्त:शक्ति पर खराब असर डालने वाले होते हैं तथा महिलाएं स्वयं इन रीति रिवाजों से जुड़ी हुई है। इसके कारण वे खुद अपने अस्तित्व से कमजोर पड़ जाती है और परिजनों के अधीन बनी रहती है। इसी कारण वो मजबूत और मुखर नहीं हो पा रही है। वो धर्म जाति, रीति रिवाज के कारण पुरानी सड़ी गली परम्पराओं को तोड़ नहीं रही है।

राजसमंद जिले में ज्यादातर ओबीसी, एसटी, एससी समुदाय के लोग है, जिसमें बाल विवाह और नाता प्रथा, डायन प्रथा का काफी प्रचलन है और इन्हीं प्रथाओं के कारण महिलाओं का हर स्तर पर शोषण होता है और उनको हिंसा सहन करनी पड़ती है। बाल विवाह होने के कारण बालिका शिक्षा से वंचित हो जाती है और जल्दी बच्चे पैदा होने से उनके स्वास्थ्य में गिरावट आ जाती है।

शिक्षा की कमी और स्वास्थ्य में गिरावट व कुपोषित होने पर उसकी जिंदगी बदहवास सी गुजरती है। वो अपने मां बाप के घर में भी पराई हो जाती है, जहां उसे बचपन से सीख मिलती कि पीहर से डोली गई है, ससुराल से अर्थी उठेगी। इस तरह महिलाओं पर कई कारणों से कई तरह की हिंसा होती है। आत्मनिर्भर न होने के कारण वो शोषण को सहन करती रहती है।

समाज में फैली लिंग भेद का अंतर भी बेटियों की शिक्षा पर कुंडली मार रहा है। जिले में 66 फीसदी ऐसी बेटियां है, जिनको उच्च शिक्षा लेना तो दूर उसकी दहलीज भी नहीं छू पाती है। क्योंकि 5वीं से 12वीं कक्षा में आते आते या तो उनके हाथ पीले कर दिए जाते हैं या घर में कैद कर दिया जाता है। आंकड़े देखे तो चौंकाने वाली स्थिति सामने आती है। पांचवीं से नवीं में 36 प्रतिशत से अधिक बेटियों को घर में बैठा दिया जाता है, जबकि 9वीं से 12वीं तक जाते जाते यह प्रतिशत 66 तक पहुंच जाता है। वास्तविकता में 12वीं के बाद महज 7 से 8 फीसदी ही बालिकाओं को आगे की शिक्षा दिलवाई जाती है।

शिक्षा की कमी और जागरुकता का अभाव होने से नाता जैसी प्रथा भी इस क्षेत्र में फल फूल रही है। किसी समय यह प्रथा सोच समझ कर बनाई गई थी। प्राचीनकाल में बाल विवाह का प्रचलन होने से नाता प्रथा इसलिए बनी, ताकि पति- पत्नी में से किसी के भी न रहने से वो व्यक्ति दूसरे से बिना ब्याहे नाता कर सकता था, लेकिन अब यह पसंद ना पसंद एवं पैसे के लेन देन की प्रथा बनकर महिलाओं और उसके बच्चों के लिए हिंसा व शोषण का कारण बन रही है। क्योंकि दूसरा व्यक्ति आसानी से और पैसे के द्वारा उपलब्ध हो रहा है, तो लोग एक, दो, तीन क्या छह छह बार नाता करके दूसरों के साथ रहने लग जाते हैं। ऐसे कुछ केस हमारी नारी अदालत में आए हैं, जिसमें महिला को 6 बार नाते दिया है।

इस तरह लड़कियों के शोषण या उनके व्यापार की तरह यह प्रथा फल फूल रही है और इससे कई लोग फायदा उठा रहे हैं। कभी कभी ज्यादातर परिवार का दबाव लड़की को नाते जाने पर मजबूर कर देता है। वो नाते जाती भी है, तो उसके बच्चों की स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं होती है। क्योंकि बच्चे मुख्य रूप से नाना- नानी या दादा- दादी के पास रहते हैं, जहां वो बच्चों की जिम्मेदारी समझते हुए उनका जल्द बाल विवाह कर देते हैं और यही बच्चे शिक्षा से वंचित हो जाते हैं। अत: बाल विवाह होने में नाता प्रथा का भी बड़ा हाथ है।

इसी तरह जिले के आदिवासी इलाके में एससी, एसटी में डायन प्रथा का भी काफी प्रचलन है। लोग अशिक्षित है व अंधविश्वास के कारण किसी भी एकल बुजूर्ग या होशियार महिला को डायन बताकर उस पर ऐसा अत्याचार करते हैं कि वह जिंदा रहकर हर क्षण मरती रहती है। यह हिंसा अन्य हिंसा से भिन्न है। इसमें परिवार के साथ साथ पूरा गांव उस महिला के विरुद्ध हो जाता है और महिला को मानसिक और शारीरिक दोनों तरह की हिंसा का सामना करना पड़ता है।

अत: राजसमंद जिले में अगर हम जिला बनने के पश्चात् भी महिलाअहों की स्थिति पर नजर डाले तो हालत बहुत अच्छे नहीं है। जरूरत है बहुमुखी शिक्षा की, क्योंकि यहां शिक्षा के विकल्प बहुत कम है। बच्चा कुछ बनना चाहता है, तो सबसे पहले तो उसे उसकी पूरी जानकारी नहीं, अन्य विकल्प मालूम नहीं। गरीबी, दूरी, दुर्गम रास्ते, स्कूल- कॉलेज तक जाने के लिए साधन नहीं होना। ऐसी बहुत सारी सुविधाएं नहीं होने के कारण भी बच्चे मुख्य रूप से लड़कियां शिक्षा से वंचित रहकर अपनी प्रतिभा नहीं दिखा पाती है।

बहुत सारी सुविधाएं नहीं होने के कारण भी बच्चे मुख्य रूप से लड़कियां शिक्षा से वंचित रहकर अपनी प्रतिभा नहीं दिखा पाती है।

महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकने के तीन मुख्य कारण है– अशिक्षा, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और अंधविश्वास व कुरीतियां।

अशिक्षा :

परिवार का शिक्षा की दृष्टि से देखे तो हालत ज्यादा अच्छे नहीं है। अभी भी कई ऐसे कारण है, जो लड़कियों की पढ़ाई को आगे बढ़ने से रोकते हैं। (1) शिक्षा के प्रति जागरुक न होना (2) गरीबी (3) स्कूल– कॉलेज की दूरी (4) सही रास्तों का नहीं होना (5) संसाधन व्यवस्था का न होना (6) इच्छानुसार विषय प्राप्त न होना

मुख्य रूप से परिवार लड़कियों की शिक्षा को महत्त्व नहीं देते हैं व उनका मानना है कि लड़कियां ज्यादा पढ़ लिखकर क्या करेगी, करना तो घर का काम ही है। इस कारण बचपन से ही लड़कियों को घर के कार्यों की जिम्मेदारी जैसे– साफ– सफाई, खाना बनाना, छोटे भाई बहनों को संभालना दूर से पानी लाना, बकरियां चराना, काम सौंप दिए जाते हैं और शिक्षा से वंचित कर दिया जाता है। भले ही बेटी– बचाओ बेटी पढ़ाओ... जैसे अभियान द्वारा बच्चियों का स्कूल में दाखिला तो हो जाता है, मगर नियमित स्कूल नहीं आ पाती है और पांचवीं या आठवीं तक बिना पढ़े ही पास होने के बावजूद नवीं में फेल हो जाने व अन्य कई कारणों से आगे शिक्षा से वंचित हो जाती है।

पितृसत्तात्मक सोच :

शिक्षा प्राप्त न करने के कारण ज्यादातर बच्चियों का बाल विवाह या जल्द विवाह कर दिया जाता है। क्योंकि मां बाप या परिवार और समाज पुरुष प्रधान है और किशोरी की सुरक्षा व उसकी जिम्मेदारी को देखते हुए वो जल्द कन्यादान के रूप में विवाह कर ही देते हैं। गरीबी और शादी के बार बार के खर्च के कारण इन समाजों में परिवार के एक बड़े बच्चे के साथ सभी छोटे बच्चों को एक साथ ब्याह दिया जाता है। ये अबोध बच्चे जिनकी उम्र 2–3 वर्ष से 15–16 वर्ष तक ही होती है, उनका बाल विवाह कर दिया जाता है। इस कारण इस क्षेत्र में बाल विवाह का अधिक प्रचलन है। क्योंकि वो बेटी को बोझ समझते हैं और अपनी जिम्मेदारी से जल्दी मुक्त हो जाना पसंद करते हैं। पुरानी प्रथाओं के प्रति अभी तक जो सोच नहीं बदली, वो नजर आती है। बाल विवाह जिसके कारण लड़की की शिक्षा के साथ साथ स्वास्थ भी खराब हो जाता है। स्वास्थ्य की जानकारी के अभाव में जल्द बच्चे होने के कारण लड़की कुपोषित कमजोर व अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो जाती है। शरीर में काम करने की शक्ति नहीं रहती, यही से घर में उस पर शारीरिक श्रम करने की शक्ति के अभाव में अनेक रूप से हिंसा की जाती है और लड़की को ज्यादातर परिवार द्वारा छोड़ दिया जाता है या लड़का बिना तलाक लिए दूसरी पत्नी ले आता है। इसे यहां नाता प्रथा कहते हैं। इस स्थिति में ज्यादातर लड़कियां अपने अधिकार व शिक्षा के अभाव में हिंसा का शिकार होने पर या तो हिंसा सहने को मजबूर या दूसरी पत्नी लाने में भरण पोषण के लिए समाज व कोर्ट के दरवाजे खटखटाती रहती है।

ये प्रथा ओबीसी, एससी, एसटी आदि वर्ग के जाति समाज में इनकी मान्यता प्राप्त है और इस प्रथा से कई महिलाएं स्वयं के व बच्चों के पालन पोषण के लिए बाहर जाकर मेहनत मजदूरी करने पर मजबूर हो जाती है अथवा उनको भी दूसरी जगह नाता के रूप में भेज दिया जाता है। नाता प्रथा को बदलता स्वरुप यह है कि कई माता पिता बिचोलिए व समाज के ठेकेदारों का ये पैसे कमाने का धंधा बन गया है, जहां वो एक लड़की को एक बार नहीं अनेक बार नाता के रूप में बेच कर पैसे कमा रहे हैं।

हालांकि इस प्रथा से थोड़ा फायदा है कि महिला पुरुष मन पसंद के साथ रह सकते हैं, मगर नुकसान ज्यादा है। जैसे नाते के रूप में महिलाओं को सम्मान नहीं मिलता, उसको पैसो के रूप में बेचना व मोल भाव तय करना, बच्चों का माता पिता होते हुए भी दूसरों के पास (नाना–नानी, दादा–दादी) के पास जीवन गुजारना, बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो जाता है।

इसी तरह आटे साटे की भी प्रथा है, जहां भाई बहन को एक दूसरे के ससुराल में शादी कर दी जाती है। इस रिवाज के कारण भी अगर एक की गृहस्थी बिगड़ती है, तो दूसरी की भी बिगड़ जाती है। इस तरह की परम्पराओं से लड़कियों की अच्छी जमी जमाई गृहस्थी भी बिखर जाती है। इस पुरानी परम्पराओं के साथ ही महिलाओं को डायन कहने की भी एक प्रथा है, जिससे उस महिला और उसके परिवार का जीवन तो कठिन हो ही जाता है। साथ ही परिवार समाज, गांव से कट कर अलग पड़ जाता है, जहां उसे कोई सम्मान नहीं देता है। अत: इन सभी कारणों को देखते हुए हम कितनी भी संवेदनशीलता से कार्य करें, कितने ही कानून या नियम बना लें, लेकिन जब तक लोग अपनी सोच में बदलाव नहीं लाएंगे। महिलाओं को भी एक इंसान के यप में नहीं मानेंगे, महिलाएं स्वयं अपने अधिकारों के प्रति जागरुकत नहीं होगी, तब तक महिलाओं की स्थिति बेहतर नहीं बन सकेगी।

शकुंतला पामेचा
संयोजक राजसमंद जन विकास संस्थान, राजसमंद
मो. 99298-26721

राजस्थानी केणावतां

कुलकी में गोळ नी फोड़णो

अर्थात् – अपने विचारों को अव्यक्त रखते हुए कार्य करने को कुलकी में गोळ फोड़ना कहा जाता है। ऐसा षड़यंत्री व्यक्ति करते हैं, जिनके कार्य रहस्यमय व अशोभनीय माने जाते हैं।

थोथा चणां अर वाजे घणा

अर्थात् – अयोगय लोगों का इतराकर या दिखावा करके काम करना। बिना गुण के गर्व करने पर यह कहावत चरितार्थ होती है।

घणा गाजे वो वरै कोनी

अर्थात् – अधिक बकवास करने वाला कार्य करने में कमजोर होगा। वह सिर्फ वाणी द्वारा बढ़ा चढ़ाकर अभिव्यक्त कर सकता है, लेकिन उसमें कार्य क्षमता की कमी ही होगी।

पाणी वतावै जठे कीचई नी लादे

अर्थात् – झूठ बोलने की आदत वालों का कभी भरोसा नहीं करना चाहिए। क्यों वे जैसा बोलते हैं, वैसा करते नहीं है।

हूरां लारे हांठा नी भांगणा

अर्थात् – किसी समर्थ व्यक्ति की बराबरी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि उसमें लाभ के स्थान पर हानि की अधिक संभावना रहती है।

चुणाव री चौपाल

गांवां रा चौरां पै अणां दनां में चुणावां री धूणां धधकवा लागी गी है अर ठाड री धूजणी नै वोटां री वाताऊं भगावा हारूं डींगां रा लांबा लांबा डींगला हलगाईने दस दस वज्या तांई बैठीने गप्पा हांक रिया। वाता रा चटकारा लेवा लागी रिया। चेनपुरा रा चेना बा, देवो डाकोत अर भेरा भांभी री वातां हुणीन म्हने लागो के अबे गांवड़ा में कोई नवो हूरज उगवा वाळो है। जसूं आ माह मीना री ठाड में तेज रौ तावड़ो मली सकेला। मेंगाई री मार सू देस रा गरीबां नै थोड़ी घणी राहत मलेला। भ्रष्टाचार रौ भूत भागेला अर थरथराती ठाड सूं सड़कां पै भमता ढांडा– ढोर आपणी ठावी ठोर पावेला। भण्यां पढ्या टाबर– टाबर्‌या नै कोई काम मलेला तो हमझांगा क आछा दन आइ ग्या है। देवो डाकोत चेना बाऊं बोल्यो– काओ बा! आपणे गांव में सरेपंच रौ चुणाव कुणी लड़ रियो है ओ? म्हें तो हांभल्यो के आपरो मोटको छोरो चमन्यो सरेपंच रो उमीदवार वणी रियो है? नीरे, थनै कणी कियो, कुण केवे अर अठारी वात। बा! कुलकी में गोळ मती फोड़ो वेई जो चौड़े आई।

अतराक में भेरो भांभी कहवा लागो– रावळा रा नैनक्या बापू सरेपंच वणवा रो मूंडो धोई रिया है। क्यूंके अबके आपणे गांव रा चुणाव री गोट्या पड़ी, जणी में अठारी सामान्य री सीट निकळी। आ वात हुणताई रामो उतावलो वेईन बोल्यो– ऐ! रावला रा बापू! वे तो पाणी वतावे जठे गादोई नी लादे...। अस्या नै कुण जीताई? अरे वे गाम रौ कई भलो करेला। देवा रा मुंडा सूं अचवच रा सबद फुस फुससाया अर लोगां हुण्यो– चेना बा! थां हूंरा लारे हांठा क्यूं भांगी रिया हो...। थांरो छोरो तो पांचवी पास है अर कई सरेपंचगरी करे सकेला। री वात रावला रा बापू री जो थोथा चणा ने वाजे घणा... कहावत वाळू है। अरे अबाणु हेंग सरेपंच रा दावेदार वणी रिया है, पण म्हने तो लागे के ऐ हेंग बड़बोला– घणा गाजे पण वरेला कोनी...।

आपणे तो वी आदमी ने ऊबो करणो है, जो पढ्यो लिख्यो अर समझदार वे। गाम री खेती बाड़ी में करसां ने लोन दिला मदद दिवाई सके अर पाणी रो परबंद, खाद बीज रो गोदाम खोलाई सकें। रूपाला ने कई चाटे। रातरी ठाड़ घहराती गी, धधकती धूणी ठाड़ी वी अर सब आपणे आपणे घरां रो गेलो पकड़वा लागा। चौपाल ऊंघती री।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
जाट गली, कांकरोली
मो. 99286-25757

चुनावां रो चस्को

आजकाला जटे देखो वटे लोग वावळा वेईरा,
पूछां तो केवे– भाई साहब आपां तो चुनाव में खड़ा वेईरा।
एरीया गेरीया ने भी चुनावां रो चस्को लागी रो,
ने वणां वेंडा ने लागी रो के माणो तो भाग जागी रो।
कोई फेसबुक पे फोटू नाकी ने राजी वेई रा,
तो कोई रात में तपण्या पे परचार करी रा।
जणी ने कोई पावली भी उदार नी दे,
वो भी चुनाव में मुण्डो ऊंचो करिरो
ने आजकाल एक दुपट्टो गळा में गाली ने फरिरो।

मुं मन में केऊं, मुंडा पे तो किस्तर केऊं, मुं मन में केऊं बेटी रा बाप
थारा घरे उन्दरा तो ग्यारस करीरा अर थारा छोरा छोरी तो भूका मरीरा
थारी बाई फाटा फाटा पेरी ने फरीरी,
ने अणी उम्र में भी मेनत मजूरी करीरी
ढांडा ज्यूं थूं अटिने वटिने फरे, ने दन भर काइस काम नी करें

अणी चुनाव में थने कई खावा ने मलेगा,
ऊंचा चड़वा री कोशिश में निचे परो गड़ेगा।
अणी चुनाव में थने कस्या काकाजी वोट देगा,
ने रिप्या मांगवा वाळा मल ग्या तो बजार वसे होट देगा
मनका वसे थारो क्यू माजणो वगड़ाई रो है
अर कासा भाव में क्यू हांकळ वाईरो हैं।

भाया रे बाद में मोर गणा दूखेगा, मनक देकी ने हंसवाऊ नी रूकेगा
भाया गोदडी देकी ने अल्डी कर टांग, यूं हुर रा लारे हांटा मती भांग।
भाई लोगा जो भी खडा वेई रा हो, तो विजय री एक वात मान जो।
अणी चुनाव लड़वा ने आपणां घर खेत नामें मती मांड जो

विजय शर्मा
उप सम्पादक जयवर्द्धन

नारी सम्मान के लिए पहल जरूरी

महिला अत्याचार व समाज की भूमिका पर जयवर्द्धन की ओर से आयोजित संगोष्ठी में विचार विमर्श करते प्रबुद्धजन।

महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार और समाज की भूमिका के विषय को लेकर **जयवर्द्धन की ओर से** कांकरोली में एक विशेष विचार गोष्ठी आयोजित की गई। परिचर्चा में नवनीत के रूप में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, उन्हें हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है इस ज्वलंत एवं चिंतनशील विषय पर जो सार्थक परिचर्चा आयोजित हुई है, उसके निष्कर्षों से आप भी लाभान्वित होंगे एवं समाज को सोचने की एक नई दिशा प्राप्त होगी। हम इस आलेख में परिचर्चा में व्यक्त किए गए विचारों एवं उठाए गए प्रश्नों के जवाबों को समेकित करके प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें **शिक्षाविद् डॉ. राकेश तैलंग, महिला मंच संयोजक शकुंतला पामेचा, कॉलेज प्राचार्य डॉ. रचना तैलंग, अधिवक्ता ललित साहू, बाल विवाह शून्य कराने वाली पहली आदिवासी बालिका जसोदा गमेती, कमलेश जोशी, अन्नू राठौड़, परितोष पालीवाल व जयवर्द्धन उप सम्पादक विजय शर्मा ने मिलकर गहन चिंतन, मनन व विचार विमर्श किया**, जिसमें मुख्य तौर ये बातें उभरकर सामने आए हैं।

सवाल : महिलाओं पर इन दिनों जो अत्याचार बढ़ रहे हैं, उनके पीछे क्या कारण है ?

जवाब : अलग अलग महानुभावों ने अलग अलग विचार व्यक्त किए। कुछ का मानना था कि वस्तुत: अपराध नहीं बढ़े हैं, लेकिन अखबारों एवं मीडिया के माध्यम से इस प्रकार के अपराधों को विशेष रेखांकित करके बार बार परोसा जा रहा है। इससे हमें समाज में ऐसे अपराधों की अधिकता प्रतीत हो रही है। मीडिया की भूमिका पर आलोचनात्मक टिप्पणी करते हुए प्रतिभागियों का एक स्वर में मत था कि इन अपराधों की आलोचना करने की आड़ में **मीडिया इन्हें एक बिकने वाली स्टोरी के रूप में प्रस्तुत करके बेचता है। यह एक अत्यंत नकारात्मक मैसेज समाज में देता है। इससे समाज में भय का माहौल बढ़ता है।** बालिकाएं तनावग्रस्त होकर कुंठित होती है। एक पक्ष का यह भी मानना था कि इन दिनों बालिकाएं घरों से ज्यादा निकलती है। कामकाजी महिलाओं की संख्या में भी वृद्धि हो गई है। विद्यालय, कॉलेज में भी लड़कियों की संख्या भी बढ़ी है, इस कारण भी अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई है। कार्य क्षेत्र पर एवं शिक्षण संस्थाओं में होने वाले अपराधों में विशेषकर वृद्धि हुई है, जो निंदनीय है। यद्यपि कार्यस्थलों एवं शिक्षण संस्थानों में गंभीर मामले दर्ज नहीं किए गए हैं, तथापि महिलाओं के हैरेसमेंट के मामलों में वृद्धि हुई है।

इस समस्या के समाधान हेतु जो विचार आए हैं, उनमें प्रमुख कार्यक्षेत्र में देरी होने की स्थिति में कामकाजी महिलाओं को विशेष सुरक्षा प्रदान की जाए। शिक्षण संस्थाओं में महिलाओं के हैरसमैंट से संबंधित सुनवाई के लिए अलग प्रकोष्ठ बने एवं ऐसे किसी भी मामले की प्रथम शिकायत पर ही त्वरित एवं गंभीर कार्यवाही हो, ऐसा विचार सभी की तरफ से आया है।

सवाल : इन दिनों महिलाओं पर यौन हिंसा से संबंधित अत्यंत कठोर कानूनों की मांग भी बढ़ रही है एवं कुछ मामलों में अत्यंत कठोर कानून बनाए भी जा चुके हैं, क्या इन कानूनों से समाज को फायदा होगा ?

जवाब : अत्यंत विरोधाभासी निष्कर्ष हमें प्राप्त हुए हैं। प्रमुख बात जो सामने आई कि कठोर कानूनों की आवश्यकता है, लेकिन जिस प्रकार से भावनात्मक धरातल पर इन दिनों कानून बनाए गए हैं, उनसे अपराध की गंभीरता बढ़ने का खतरा है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता। ऐसी बात भी वक्ताओं के अनुभवों से सामने आई कि **इस संबंध में अधिकांश मुकदमों का निष्कर्ष समझौते या झूठा साबित होने के साथ ही हो जाता है। बहुत कम वास्तविक अपराध सामने आते हैं।** ऐसे में जो अपराधी नहीं है, वह ऐसे जटिल और दृढ़ कानूनों में फंसकर अपने जीवन के बहुत से समय को जेल में भंयकर तनाव एवं सामाजिक बदनामी के साथ बिताता है। इस पर भी विचार किया जाना चाहिए। एक अत्यंत गंभीर पहलू सामने आया कि **न्याय में देरी।** इन अपराधों के लिए जो न्याय प्रक्रिया है, वह अत्यंत कष्टदायक एवं समय लेने वाली होने से भी इन अपराधों के प्रति अपराधियों के मन में विशेष डर नहीं पनपता है, इसलिए कानून की प्रक्रियाओं को तेज करने की महती आवश्यकता है।

सवाल : इस प्रकार के अपराधों में मीडिया की क्या भूमिका है ?

जवाब : सभी वक्ताओं ने एक स्वर में मीडिया के द्वारा कार्यक्रमों में परोसी जा रही अश्लीलता को एक बहुत बड़ा कारण बताया। मीडिया पर बाजारवाद इतना हावी है कि टीवी जो एक परिवार के लिए मनोरंजन का साधन है, उस पर किन चीजों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए और किसे नहीं, इस सीमा रेखा को भुला ही दिया गया है। सबने सरकार के रवैये की आलोचना की कि मीडिया को आजादी के नाम पर अश्लीलता परोसने की छूट देना कहां तक जायज है।

सवाल : पुरुष और महिला की मूल प्रवृत्तियों को आप कहां तक जिम्मेदार समझते हैं ?

जवाब : कुछ वक्ताओं ने यौनेच्छा की मूल प्रवृत्ति को तो जिम्मेदार माना, लेकिन उससे भी ज्यादा जिम्मेदार **पुरुष की अहंकार प्रवृत्ति एवं महिलाओं की शर्म को भी माना है, जो कई बार पुरुष को शह देने का कार्य करती है।** अपनी शर्म के साथ ही महिलाओं में कहने पर घर में कैद होने की संभावना के कारण चुप रहने की प्रवृत्ति को भी दोषी माना है, जो अपराधी के हौसले बढ़ाती है।

सवाल : क्या आपको नहीं लगता कि प्राकृतिक परिपक्वता की उम्र के बाद भी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं सामाजिक अपेक्षाओं के कारण बहुत लंबे समय तक युवक युवतियों का अविवाहित रहना भी इस प्रकार के अपराधों को बढ़ावा देता है ?

जवाब : अधिकांश प्रतिभागियों ने इसे एक गंभीर समस्या के रूप में चिह्नित किया है। साथ ही इस पर भी बल दिया है कि परिवार के साथ अधिक समय न बिता पाना और लंबे लंबे प्रवासों के कारण भी इस प्रकार के अपराध बढ़ते हैं। पारिवारिक मनमुटाव, तलाक, छोड़ना भी कुछ महत्वपूर्ण कारण है, जो अपराध की जड़ों में पाए जा रहे हैं। **डॉ. राकेश तैलंग** वर्तमान समय में सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक व्यवस्थाओं को नकारे जाने को भी एक सूक्ष्म किंतु महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखते है।

सवाल : यदि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था इसमें कहीं दोषी है, तो किस तरह ?

जवाब : शिक्षाविदों ने वर्तमान शिक्षा को दोषी तो नहीं कहा, किंतु सुधार की गुंजाइश को नहीं नकारा। सभी ने एक स्वर से नैतिक शिक्षा को पांचवी कक्षा तक एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाए जाने एवं शिक्षा नीति में उल्लेखित दस मूल तत्वों को पाठ्यक्रम में लागू करने की बात भी कही है। यह बात भी निकलकर आई है कि आठवीं तक के बच्चों को साहित्य और संस्कारों की शिक्षा अधिक दी जाए, दूसरे विषय चाहे कम ही क्यों न करने पड़े।

सवाल : क्या स्त्री और पुरुष को अलग अलग शिक्षा देने की आवश्यकता है ?

जवाब : प्रतिभागियों ने अलग अलग मत प्रस्तुत किए। कुछ ने सभी को समान शिक्षा देने की वकालत की है, तो कुछ प्रतिभागियों का यह भी मानना था कि क्योंकि स्त्री और पुरुष की प्रकृति में जन्मजात अंतर है। उनकी मानसिकता एवं आवश्यकता में भी अंतर है। **इस आधार पर स्त्रियों के लिए यदि अलग शिक्षा का प्रावधान न भी किया जाए, तब भी कुछ विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता है। ऐसा ही बालकों की शिक्षा के साथ भी है।** अत: विद्यालय में चार से छह कालांश एक समान शिक्षा के हो तथा अंतिम दो कालांश विशिष्ट शिक्षा के लिए हो, तब भी एक क्रांतिकारी परिवर्तन दृष्टिगत हो सकता है। इस पर पायलट प्रोजेक्ट के रूप में अध्ययन करने की आवश्यकता है और प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इसे लागू करने पर विचार किया जा सकता है।

सवाल : समाज और सरकार इसके लिए क्या कर सकता है ?

जवाब : इस पर निम्नलिखित बिन्दु सामने आए, जिनमें मुख्य तौर पर (1) तनाव प्रबंधन की व्यवस्था करना (2) पारिवारिक कुंठा से गुजर रहे व्यक्तियों के लिए काउंसलिंग की सुविधा उपलब्ध कराना (3) सामाजिक व्यवस्थाओं में स्त्री पुरुष के प्राकृतिक कारकों को विशेष स्थान देना (4) पुलिस के द्वारा त्वरित कार्रवाई एवं इस प्रकार की शिकायतों का तीव्र निस्तारण (5) जेंडर संवेदनशीलता की कार्यशालाएं विशेषकर निचले तबकों तक आयोजित करना।

- कार्यक्रम संयोजक : परितोष पालीवाल, साहित्यकार

भाव : विरह

उर्मिला का वसंत

हाय! यह कैसा है वसंत?
कैसा है यह मधुमास सखी
प्रिय गए हैं वनवास सखी
खोए हैं मेरे दिग् दिगंत
हाय! यह कैसा है वसंत?

वन वल्लरियां खिल रहीं सुघर
कोकिल, पीहू गा रहे मधुर
किन्तु प्रिय, मेरे पतझड़ का
दिखता है न कोई आदि अंत
हाय! यह कैसा है वसंत?

पीली पीली सरसों फूली
क्षण एक न मैं प्रिय को भूली
किन्तु मुझको प्रिय भूल गए
क्या होते हैं ऐसे निसंग?
हाय! यह कैसा है वसंत?

भ्रातृ धर्म का मान रखा
खुश हूं, प्रिय ने सम्मान रखा
किन्तु, क्या पत्नी का भी हाय
किंचित भी उन्होंने मान रखा?
लंबी है मेरी कालरात्रि
चहुंओर निशा, न कोई अंत
हाय! यह कैसा है वसंत?

इसको मेरी निद्रा न कहो
इक नवोढ़ा का दुर्भाग्य कहो
या दुर्भाग्य हर स्त्री का
जिसको न मिला सम्मान उचित
निज उर से कर पालित पोषित
जो सहती सारे पुरुष दंश
हाय! यह उर्मिला का वसंत!

अर्चना आनंद भारती
आसनसोल, पश्चिम बंगाल

पत्र सा बदलाव

आज गुम हो गए
भीड़ भाड़ में
कहीं पत्र, जिनमें लिखे जाते थे
प्यारे, प्रिय, प्रीतम...
शब्दों में रचता बसता था
अपनापन
लिखने में लगता था
जीवंत हो रही हैं भावनाएं
गाढ़ी, फीकी स्याही भी
देती थी अलग संदेश
शब्दों का आकार ही बयां कर
देता था नाराजगी
पर आज शब्द बचे हैं न
उनके मायने
सब बदल गया
आज हावी हैं सोशल मीडिया
डार्लिंग, लव यू, मिस यू...
फर्क भाषा का नहीं
जज्बातों का है
क्योंकि आम हो चले हैं
वे सारे खास शब्द
जिन्हें लिखकर चार बार
काटना पड़ता था,
मिटाना पड़ता था
उसके बाद भी
कहीं न कहीं झलक पड़ता था
उनका असली रूप
लेकिन आज एक डिलीट
खत्म हो गई सारी भावनाएं
मानो दिल से ही मिट गई हो
सारी स्याही
आज रिश्तो में भी दिख रहा है
पत्र सा बदलाव है

अंकिता सिंह
विजय नगर, कानपुर

लो अच्छे दिन आ गए

लो अच्छे दिन आ गए, मोदी जी सबको भा गए
इसीलिए जनता ने दुबारा, पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई है
अब तो पूरे विश्व में छा गए
लो अच्छे दिन आ गए.....।

तुम रोते रहे, जीएसटी और नोटबंदी का रोना
जेल भेज दिया और भेजेंगे, जो घोटालेबाज देश का पैसा खा गए।
लो अच्छे दिन आ गए.....।

चन्द्रयान 2 भेजकर दुनिया में फिर जय-जयकार हो रही है,
क्या भूमि क्या सागर, अंतरिक्ष में भी इतिहास रचा गए।
लो अच्छे दिन आ गए.....।

तीन तलाक और सवर्णों को आरक्षण बिल राज्यसभा
और लोक सभा में पास करवाके, विपक्ष को राजनीति सिखा गए
लो अच्छे दिन आ गए.....।

धारा 370 को खत्म कर कश्मीर में आजादी लाई है,
जो नामुमकिन को मुमकिन करके, नापाक देश में खलबली मचा गए
लो अच्छे दिन आ गए.....।

हर भारतीवासी का और अटलजी का सपना था,
राम लला हम आएंगे, मंदिर वही बनाएंगे
बरसो पुराना वादा मोदी जी निभा गए।
लो अच्छे दिन आ गए, मोदी जी सबको भा गए।।

बख्तावरसिंह चुंडावत 'प्रीतम'
आमेट, राजसमंद
मो. 94132-87301

कर्म

कर्म का नहीं कोई मर्म, मानव की दिनचर्या है कर्म
श्रमशील का गहना है कर्म, निट्ठले को प्रवीण बनाता है कर्म
मेहनत का प्रतिफल होता है कर्म,
असफलता का पुनरुद्धार होता है कर्म
सफलता का आधार होता है कर्म
दुर्भाग्य का हन्ता है कर्म, भाग्य का नियंता है कर्म

बसंत त्रिवेदी
सेवानिवृत प्राचार्य
मावली (उदयपुर)
मो. 99290-77861

"SHREE"

Tension®

SHOWROOM

Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt

धमाका ऑफर

लोग सस्ता कहते है, हम सस्ता देते हैं....

ब्राण्डेड शर्ट

1 पीस

₹ 299 में

ब्राण्डेड जीन्स

1 पीस

₹ 499 में

शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास

100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)

Mob. 8769955630, 7230059101

अपने **बिजनेस**

को दें

बुलन्दियां

सस्ती दरों पर

जयवर्द्धन

पत्रिका में

विज्ञापन

प्रकाशित कराएं।

स्पेशल ऑफर

विज्ञापन साइज

5 X 8 CM

सिर्फ

₹1000/-

सम्पर्क

शक्ति एडवरटाइजिंग

C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

Master Your Time

Success SPRINTS

I wish, I would have got little more time to get the expected work done comfortably.

I wish, I would have got 5 minutes more to finish my Math paper today.....

I wish, God would have created a few more hours....

Time is something we all want more and more of; more time to get through all our work, more time to be with family & friends and more time to get relaxed. We are busy round the clock, getting frustrated just because we simply do not have the time we want. And from where to get this time, none knows. Feeling stressed and overwhelmed constantly is not fun at all, then how to have fun, enjoy, feeling relaxed and be happy? It's really a question to ask to our good self.

Actually, it's not like others get more hours, or they are blessed with special blessings for having extra time or they have some Chirag of Alladin or such people possess specific skills and techniques. Then what's the reason of difference?

365 days, 1 month, 1 week, 24 hours& so the minutes & seconds.....

This is what we all received naturally with no partiality but the root cause of the success is –a mindset that enables a few to manage their time very smartly & effortlessly which makes the difference, one who manages smartly, utilizes the time, getting organized and change oneself, have more and more opportunities to be successful. Let's know, how to master our own time-

1. Stop Blame Game- It's very easy to blame others for not being accomplish what you needed to, take responsibility for your actions and for how you spend your time and what you achieve. Like you spent your time with the stupid entertainment box for 3 hours and missed the important assignment to be submitted tomorrow, was your decision and so your responsibility.
2. Getting organized- Get yourself organized with the time don't just think that you are so and you will be doing the work in this way or that way only or like you are so by birth, because the habits we develop and those can be changed by a commitment.

3. Thinking- No, not exactly in your habitual way but in terms of looking for opportunities to leverage your time, prioritizing your actions and knowing the best way to focus your actions. The way you plan your days and perform your task shows your mindset, your thinking which guides you in right or wrong direction which appears as result later.

4. Be Positive- Don't tell yourself that you are not going to get things finished in time or your efforts are not going to get you the outcome. Manage your time smartly do not talk negative. Remember, what you expect, you get. Feel empowered and in control, be affirming to yourself that it will work out well and your action will be directed accordingly. Your external world reflects your internal world hence be positive and feel strengthened.
5. Change- You are putting all your efforts and not getting the results as per expectations, change the way you think, work and where & how you utilize your time because the same process will generate the same result and to change the result, process needs to be changed.
6. Believe in self- You may know all the tools and techniques but if you do not believe in yourself and your strength it is not going to be worth and you will keep on struggling.
7. Decide Priorities- See the successful people those who are exceptionally different while they were not born with silver spoon in mouth. Their commitment towards goal and their perspective of looking at time made them differently known in the crowd. One should plan the task and priorities must be taken care to achieve goals.

If you don't think you have time to do something, you will probably not find it, if you think you are unable to manage your time and avoid damages, this will be your experience. Time remains same for kings and slaves, meritorious & non-meritorious but their ability to master own time makes them different. Be the master of your time.

Wishing you a happy & healthy time ahead.

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study International School Rajsamand

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

प्रस्तुति : परितोष पालीवाल 82338 82818

1. शतरंज में भारत की पहली महिला वर्ल्ड चैंपियन कौन है ?
2. राष्ट्रपति रामनाथ कोविद के हाथों अमिताभ बच्चन को हाल ही में किस पुरस्कार से नवाजा गया है ?
3. दादा साहब फाल्के का पूरा नाम क्या है ?
4. माघ मेला 2020 कहां मनाया जा रहा है ?
5. झारखंड के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री का क्या नाम है ?
6. सी.ए.ए. का पूरा नाम क्या है ?
7. एन.आर.सी. का पूरा नाम क्या है ?
8. एन.पी.आर. का पूरा नाम क्या है ?
9. एन.पी.आर. के लिए प्रावधान संविधान के किस प्रावधान में है ?
10. अंतरिक्ष में सबसे अधिक समय तक रहने वाली महिला का क्या नाम है ?
11. हाल ही में खोजे गए उपग्रहों के बाद सौरमंडल में सर्वाधिक उपग्रहों वाला वाले ग्रह का नाम बताइए ?
12. गूगल की पैरंट कंपनी अल्फाबेट के नए सीईओ का क्या नाम है ?
13. वर्तमान में दुनिया में सर्वाधिक वेतन पैकेज पाने वाले भारतीय व्यक्ति का क्या नाम है ?
14. हाल ही में आयुषी ढोलकिया का नाम क्यों चर्चित रहा ?
15. मिस यूनिवर्स 2019 का खिताब किसने जीता ?

उत्तरमाला

(1) कोनेरू हंपी (2) दादा साहब फाल्के पुरस्कार
(3) धुंडीराज गोविंद फालके जिन्हें भारतीय सिनेमा का जनक भी कहते हैं। (4) प्रयागराज में (5) हेमंत सोरेन
(6) सिटिजनशिप अमेंडमेंट एक्ट
(7) नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजनशिप
(8) नेशनल पापुलेशन रजिस्टर
(9) सिटिजनशिप ऐक्ट, 1955 के सेक्शन 14A में यह प्रावधान तय किए गए हैं। केंद्र सरकार देश के हर नागरिक का अनिवार्य पंजीकरण कर राष्ट्रीय पहचान पत्र जारी कर सकती है
(10) किरदीना कोच
(11) शनि (82 उपग्रह), बृहस्पति के 79 उपग्रह हैं
(12) सुंदर पिचाई (13) सुंदर पिचाई
(14) उनके मिस दीन इन्टरनेशनल 2019 का खिताब जीतने के कारण।
(15) जोजिबिनी टुंजी.दक्षिण अफ्रीका

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती.....

पता ..... राज्य .....

फोन (निवास) .....मोबाइल .....ई-मेल .....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु .....का डी.डी या चैक नं. .....

तिथि ..... प्राप्त करें।

बैंक का नाम .....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
3 वर्ष	36	720	220	200 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

आज ही प्रवेश लें

गर्मी की छुट्टियों में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर

100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण

Internet	MS Powerpoint	MS-Word	MS-Excel
ई-मेल अकाउंट खोलना	प्रजेंटेशन	बायोडेटा	बिजनेस प्लानर
ई-बुक्स पढ़ना	फोटो एलबम	निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट	हफ्ते के कामो की सूची
विदेशी भाषा सीखना	सर्टिफिकेट	आई कार्ड	पॉकेटमनी प्लानिंग
टिकट बुकिंग	पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड	विज्ञापन/नोटिस	जमा-खर्च
यु ट्यूब पर विडियो देखना	कम्पनी प्रोफाइल	लेटर पेड/ऐनवल्प	टेक्स केलकुलेटर
फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज	बिजनेस प्रजेंटेशन	विजिटिंग कार्ड्स	फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

New

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्पयूटर कोर्स

सनशाईन इंस्टीट्यूट

sunshininstitute9@gmail.com

गांवगुडा, तहसील खमनोर जिला राजसमंद

ICICI बैंक के पास बस स्टेंड, केलवा मो. 7976752935, 9950084705

कांकरोली में हॉकी की पौध तैयार करने में मोहनलाल पालीवाल की खास भूमिका

कांकरोली की धार्मिक नगरी में मालनिया चौक मोहल्ले के नजदीक मंडा की गवाड़ी में 31 जनवरी 1918 को श्री मियारामजी पालीवाल के घर प्रतिभाशाली बालक का जन्म हुआ। मां जमना बाई ने बड़े चाव के साथ मोहनलाल पालीवाल रखा। बचपन से ही आप बहुत ही कुशाग्र बुद्धि के थे। माता और पिता के संस्कारों ने आपको सद्गुणी और संस्कारी बनाया। बचपन से किशोरावस्था में पढ़ने में मग्न हो गए। सन् 1937 में मैट्रिक की परीक्षा अच्छे अंकों से पास कर ली। उनके एक बड़े भाई जयकिशनजी उस समय के अच्छे पहलवानों में गिने जाते थे। जयकिशनजी चाहते थे कि उनका भाई भी पहलवान बने, पर उनका मन तो हॉकी खेलने के प्रति आकर्षित था और होता भी क्यों नहीं? उस समय कांकरोली दूर दूर तक हॉकी खेल के लिए जाना जाता था। कई अच्छे अच्छे खिलाड़ी उस समय कांकरोली का नाम रोशन किए हुए थे। अत: वे भी पढ़ाई के साथ-साथ हॉकी खेल को ही अपना आदर्श मान हॉकी खेलने लगे और इस खेल में उन्होंने महता हॉसिल कर ली। फिर महाराजा क्लब कांकरोली की ओर से खेलने लगे।

सन् 1948 में उन्होंने एमए पास करने के बाद भीम से प्रधानाध्यापक की नौकरी प्रारम्भ की। खेलों के प्रति आपका रूझान ज्यों का त्यों बना रहा। वे रोज सुबह शाम बालकों के साथ हॉकी खेलते और खिलाते रहे हैं। फिर 1951 में उनका राजनगर में प्रधानाध्यापक पद पर स्थानान्तरण हो गया और हॉकी खेल को अपना आदर्श बनाकर खेलते रहे और खेलाते रहे। उस समय हॉकी के मशहूर सितारे श्याम और किशन की जोड़ी राजनगर में ही पढ़ रही थी।

अत: उन दोनों ही सितारों को हॉकी की दुनिया में चमकाने का अथक प्रयास श्री मोहनलाल ने ही किया और वे उसमें सफल भी रहे। आगे चलकर श्याम और किशन की इस जोड़ी ने हॉकी की इस दुनिया में कई आयाम स्थापित किए, जिसे श्री मोहनलाल की मेहनत का नतीजा ही कहा जाएगा।

सन् 1958 में वे आमेट प्रधानाध्यापक बन गए। वहां उन्होंने बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ खेल में भी कई आयाम स्थापित किए। उनके समय में बालक उनकी शिक्षा को आज भी बड़े आदर के साथ याद करते हैं। वे आमेट में सन् 1958 से 1967 तक रहे और उस समय उनके कार्यकाल में विद्यालय हॉकी में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान पर रहा। ये उस समय की एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। सन् 1967 में उनको शिक्षक दिवस पर शिक्षा के क्षेत्र में राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुआ और वे पदोन्नत होकर जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर चित्तौड़गढ़ में कार्यभार संभालने चले गए। वहां सन् 1970 तक रहे और फिर 1970 से 1972 तक भीलवाड़ा शिक्षा अधिकारी के पद पर कार्य किया।

सन् 1972 में फिर पदोन्नति होने पर शिक्षा उपनिदेशक के पद पर जोधपुर बीकानेर रेंज पर आसीन रहे। सन् 1973 में इसी पद से सेवानिवृत हो गए, पर उनके राज्य स्तरीय पुरस्कार और काम को देखते हुए सरकार ने उनका कार्यकाल तीन साल के लिए और बढ़ा दिया और उनकी इच्छानुसार तीन साल के लिए श्रीबालकृष्ण उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक पद पर फिर कार्यरत रहे।

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के

जयवर्द्धन पत्रिका

की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

मैं इसे अपना सौभाग्य समझुंगा कि मुझे अध्यापक के रूप में उनके साथ 1973 से 1976 तक काम करने का मौका मिला। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के सान्निध्य में काम कर बहुत कुछ सीखा और समझने का मौका मिला। मुझे याद है कि सन् 1974 को दिसम्बर का महीना कड़ाके की ठंड और बच्चों की स्कूल ड्रेस खाकी हाफ पेन्ट व सफेद कमीज, कुछ बच्चे रंग- बिरंगी फुल पेन्ट पहनकर आ गए, तो उनको यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सभी बच्चों को प्रार्थना हॉल में बुलाया और कहा। बच्चों हमें हर हाल में नियम का पालन करना ही चाहिए। कल से सभी बच्चे स्कूल ड्रेस में ही आएंगे। मैं भी कल से स्कूल ड्रेस में ही आऊंगा और सचमुच वे खाकी हाफ पेंट और सफेद कमीज में सुबह 7 बजे स्कूल गेट पर खड़े हो गए और एक एक बच्चे की ड्रेस देखकर ही उन्हें स्कूल में प्रवेश दिया। ऐसे आदर्शवादी और सिद्धान्तवादी थे मोहनलालजी। वे सन् 1976 तक प्रधानाध्यापक पद पर रहे और इस दरमियान वे हमेशा स्कूल में खाकी हाफ पेंट व सफेद कमीज में ही रहे।

इस दौरान कांकरोली हायर सैकण्डरी स्कूल में भी खेल के कई कीर्तिमान स्थापित किए। हॉकी में विद्यालय ने राज्य स्तर पर स्थान प्राप्त किया। वे अक्सर रोज शाम बच्चों के साथ हॉकी खेला करते। वे बच्चों से कहा करते कि बच्चों खेल को खेल के नियमों से खेलो सफलता जरूर मिलेगी। अगर नियम तोड़ा तो फाउल होगा और तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाओगे अर्थात गोल नहीं कर सकोगे। अत: नियमों का पालन करने पर ही लक्ष्य हासिल होगा। नियमों का पालन हर क्षेत्र में तुम्हें सफलता देगा।

मोहनजी शिष्टाचारी व बड़े नम्र स्वभाव के थे। सामाजिक सरोकारों में भी उनकी कोई सानी नहीं था। सभी छोटे-बड़ों का सम्मान करना उनसे आत्मीयता से मिलना, अच्छा बर्ताव करना, उनकी विशेषता थी। अतिथि देवोभव के तो वे जिन्दा मिसाल थे। घर आए मेहमानों का आदर सत्कार उनके संस्कारों में था। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती जी एक आदर्श गृहिणी थी। मोहनजी की ही तरह वे भी अतिथियों का पूरा पूरा मान-सम्मान किया करती थी। उनके 6 बेटियां लक्ष्मी देवी, देवप्रभादेवी, इन्दुबाला, निर्मला देवी, तारा देवी और साधना थी और एक बेटा भारत भुषण। इन सबके साथ साथ हम सबको छोड़कर 4 सितम्बर सन् 1999 में स्वर्ग सिधार गए। मेरे गांव के ऐसे महान शिक्षाविद् व खिलाड़ी सपूत को स्मरण करते हुए भावभिनी श्रद्धांजलि।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
साहित्यकार, जलचक्की कांकरोली

राजस्थान पत्रिका,
दैनिक भास्कर के साथ सभी
अखबारों में विज्ञापन
प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति एडवरटाइजिंग
सभी प्रकार की खेलकूद सामग्री मिलने का राजसमंद में एकमात्र स्थान
शक्ति स्पोर्ट्स
शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
वाण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
वाण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

गणतंत्र दिवसः

खिस्तीयवर्षानुसारं जनवरीमासस्य षड्विंशे दिवसे अस्माकं देशे गणतन्त्रदिवसः समारोह सम्भाव्यते। अयं हि दिवसो भारतेतिहासेऽतीवमहत्त्वपूर्णः। पञ्चाशदधिकैकोनविंशतिशततमे खिस्तीयवर्षे तस्मिन् दिवसेऽनेकशताब्दीपरतन्त्र्यानन्तर स्वतन्त्र भारतराष्ट्र गणतन्त्रमुद्घोषितं तस्य च स्वकीय संविधान स्वकीया च शासनप्रणाली तद्दिनात् प्रवृत्ते। एतदनन्तरमेव भारतेन पूर्णस्वातन्त्र्यं लब्धमिति कथयितुं शक्यते। तस्यैव महत्त्वपूर्ण दिवसस्य स्मृतौ प्रतिवर्षमेतद्दिनं राष्ट्रियपर्वरूपेण सम्मान्यते। अस्मिन् दिने देशस्य प्रमुखेषु नगरेषु राष्ट्रियध्वजारोहणं भवति, राजकीयभवनानि च दीपमालाभिर्दीप्यन्ते, मेलकानि आयोज्यन्ते। अस्मिन् दिवसे विशिष्टः समारोहो राजधान्यां दिल्ल्यां समायोज्यते। प्रातरेव राष्ट्रपतिभवननिकटस्थे विजयचतुष्पथे विशिष्टे मञ्चे राष्ट्रपतिः भारतीयसेनायाः त्रिभ्य एव जलस्थलवायुसेनाङ्गेभ्यो ऽभिवादनं स्वीकरोति। ततो ऽपि पूर्व राष्ट्रपतिः विशिष्टेभ्यः सैनिकेभ्यो विशेषोत्साहशौर्यकौशलप्रदर्शनार्थं पदकानि वितरति। सेनाङ्गः राष्ट्रपतेरभिवादनावसरे तेषां सेनाङ्गानां स्वोपकरणैः सार्क विजयचतुष्पथादारभ्य राजधान्याः प्रमुखराजमार्गेषु रक्तदुर्ग पर्यन्तं शोभायात्रा भवति। इमां शोभायात्रां लक्ष शो जना मार्गमुभयतो वा वृक्षेषु वा भवनच्छदिषु वा सौत्सुक्यमव. लोकयन्ति। इमामेव द्रष्टुं भारतस्था विविधदेशानां राजदूता अन्ये च विशिष्टा वैदेशिकातिथयोऽपि राजपथं समवयन्ति।

सुमधुरसैनिकवाद्यसंगीतसंवलिता इयं शोभायात्रा सर्वेषां चेतांसि आन्दोलयति। अस्मिन्नेवावसरे आसेतुहिमाचलम् आद्वारिकाकामरूपं च निखिलभारतदेशस्य सांस्कृतिकी औद्योगिकी चापि शोभायात्रा भवति। वैविध्यमयं भारतीय लोकजीवनं तत्रैकत्रैव वयं द्रष्टुं पारयामः। प्रतिवर्ष मेतानि शोभायात्रादृश्यानि परिवतंतान्यत एव मनोहरतराणि नेत्रयोरुत्सवं जनयन्ति। अत एव महति शीते ऽपि आप्रत्यूषादेव जनाः स्वस्थानं गृह्णन्ति। सर्वं तत्र सुन्दरं सर्व शोभाढ्य भारतं नृत्यतीव पुरतः। प्राचीन वा नूतनं वा, निकटस्थं दा दूरस्थं वा सर्व तत्र साक्षाद् भवति भारतगौरवम्। अन्ते चाकाशे विमानैस्त्रिवण भारतीयध्वजो विशिष्टधुमोद्गमैनिर्मीयते यद्धि दृष्ट्वा जनाश्चकितचकिता इव भवन्ति। रात्रौ राजकीयभवानि दीपमालाभिः विद्योतन्ते क्वचिच्च ज्वलनक्रीडनकप्रदर्शनमपि भवति।

अस्मिन् दिवसे राष्ट्रपतिः गतवर्षस्य विशिष्टविद्वद्भ्यः पुरस्कारान् सम्मानान् वोद्घोपयति। अयं दिवसो ऽस्मान भवन भारतीयान् भेदभावान् विस्मृत्य एकभावेन राष्ट्ररक्षार्थ राष्ट्रसेवार्थं च प्रेरयति। अक्षुण्ण चिरं तिष्ठतु भारतीय गणतन्त्रम्।

सुभाषितम्

विदेशीयविज्ञाजनाः यस्य कीर्तिं
पुरा ज्ञान– विज्ञानयोर्वर्णयन्ति।।
सुवृद्धः सुसिद्धः समृद्धः प्रसिद्धः
स देशः सदा वर्धतां भाराख्यः।।

अर्थ : विदेशी विद्वज्जन जिसके ज्ञान और विज्ञान की कीर्ति को बखानते हैं। अतिप्राचीन, अतिसिद्ध, समृद्धशाली तथा अति प्रसिद्ध वह 'भारत' देश सदा प्रगति करने वाला हो। ऐसी

अमृत वचन

जाति या वर्ण का विभाजन वैदिक नहीं है। वेदो में कहीं पर भी जाति का वर्णन नहीं किया गया है। उसमें तो केवल मानव जाति के कल्याण की कामना की गई है। वेदों में प्रत्येक स्थान पर परमात्मा का समष्टि स्वरूप दर्शाया गया है। जों किसी एक जाति के व्यक्ति के लिए नहीं हैं। जाति का निर्माण व्यक्ति ने अपने स्वार्थ के लिए किया है। हम क्यों भूल जाते है कि इसी जाति के संघर्ष के कारण लाखों मनुष्य मुसलमान और ईसाई हो गये हैं। इस जातिप्रथा ने संसार में मानव जाति को जितनी हानी पहुंचाई है, उतनी किसी अन्य प्रथा ने नहीं। - महर्षि दयानंद सरस्वती

जनगणहृदयानां नित्यमाह्लादकारी
सकलबुधविकासो दुःखिपीडापहर्ता।
प्रतिदिनमपि नानायोजनाभिः समृद्धो
भवतु भुवि यशस्यो देश एष स्वतन्त्रः।।

सर्वेभ्यः गणतंत्रदिवसस्य हार्दं शुभाशयाः।

गगेन्द्र सिंह आर्य
संस्कृत पाठ्यपुस्तक लेखक
प्रधानाचार्य - गायत्री विद्या मंदिर
उ मावि किशोरनगर राजसमंद

समाज मौन, रोती नारी

क्यूं हर बार इस मौन समाज में रोती- बिलखती एक नारी होगी?
ये बात नहीं आधुनिकता और फूहड़ता की

ये तब भी हुआ, जब मैं अबला सीता थी।
ये बात नहीं आज की, बेबाक सदी की
ये तब भी हुआ, जब मैं गौ- गंगा सी पुनीता थी।
सदियों तक मैं मौन रही थी तो स्वाभिमान के लिए लड़ी भी थी
मैंने शस्त्र उठाए, शास्त्र पढ़ाए
हिम्मत के साथ कुछ नारियां खड़ी भी थी।
इस समाज ने कहा मौन रहो, चुपचाप सहो
वरना जग हंसायी तुम्हारी ही होगी।
क्यूं हर बार इस मौन समाज में रोती- बिलखती एक नारी होगी?

जन्म होते ही मार दी जाती, चाहे कितनी भी बिलखती रोती।
वाह! ये आधुनिक दुनिया, अब तो मौत गर्भ में ही मेरी होती
फिर भी मन में अपने सपने बुनकर बड़ा करने कुछ मैं थी निकली
राहों में मुश्किलें हजार, हर पद पर बैठे वहशी खुंखार
फिर भी हिम्मत कर हर बार मैं संभली
डर ये भी था साथ मांगा अपनो का तो सपने होंगे
कैद, फिर नसीब में घर की चारदीवारी होगी।
क्यूं हर बार इस मौन समाज में रोती- बिलखती एक नारी होगी?

मैं डरी सहमी सी ही तो नहीं थी, मैं सुषमा,
कल्पना, सुनीता और झांसी की रानी भी नहीं थी।
घर बसाया, देश चलाया, हर क्षेत्र में नाम कमाया
मैं सीमा पर शहीद हुई वीरांगना मर्दानी भी थी।
वो वहशी मजदूर, डॉक्टर, इंजीनियर, पुलिस, शिक्षक
तो थे ही, मैंने भी कहां सोचा था पुजारी, मौलाना
की नजरें भी वहशी बलात्कारी होगी।
क्यूं हर बार इस मौन समाज में रोती- बिलखती एक नारी होगी?

घर, कॉलेज, स्कूल, दफ्तर में कितनी वहशी आंखों
ने मुझको घुर कर देखा
जब उठाई आवाज मैंने उन्हें ना कह दिया तो
गया मुझ पर तेजाब फेंक।
बेटो को ना ऐसा वहशी शेर बनाओ, पहले अपने
घर में ही उन्हें नैतिकता और संस्कार सिखाओं।
जो अब भी ना आपके ये लाडले संभले, तो सड़क
किनारें धूं- धूं कर जलती कल आपकी भी दुलारी होगी।

क्यूं हर बार इस मौन समाज में रोती- बिलखती एक नारी होगी?
अपनी बेटी का साथ दो, उसकी यूं ना आवाज दबाओ,
वहशी थर-थर कांपे उससे, बेटी को ऐसी हूंकार सिखाओ।
लाज शर्म की दुहाई देकर, आंखों पर ना उसके पर्दा डालो
भय अग्नि से जल जाए वहशी,
बिटिया की आंखों में निर्भिकता की अंगार जला दो
ना बेटा बनेगा दरिंदा, ना बेटी कोई होगी शर्मिंदा
जब घर- घर में महिला हित में ऐसी पुरजोर तैयार होगी।
क्यूं हर बार इस मौन समाज में रोती- बिलखती एक नारी होगी?

कभी गर्भ में मरी, कभी ससुराल में जली,
मेरे साथ मानवता भी जलकर राख हो गई।
मौन समाज तमाशा देखे, नीच लोग सियासत की रोटी सेंके,
इंसान बन गया है जानवर, इंसानियत तो अब खाक हो गई।
मत सहो, मत डरो, दरिंदगी को साहस से दूर करो,
हमें सुरक्षा अब अपने दम पर करनी खुद हमारी होगी।
क्यूं हर बार इस मौन समाज में रोती- बिलखती एक नारी होगी?

मेरे तीखे-तीखे व्यंगों से नारी दु:ख का आगाज हुआ हो
मेरे इन कटू प्रश्नों से शर्मसार ये समाज हुआ हो
तो सभी मिलकर कठोर कदम उठाओ,
हर नारी को उचित स्थान दिलाओ
अब आंसू बहाने की इन वहशी दरिंदों की बारी होगी।
और करता है समाज महिला हित में कुछ ऐसा,
तो हर नारी इस मौन समाज की शत शत आभारी रहेगी।

हर आदमी कहता है, अकेली महिला सुरक्षित नहीं है,
विचारणीय तो यह बात है कि आखिर किसके कारण?

अन्नू राठौड़
बाल साहित्यकार
कांकरोली

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

सरपंच रो चुणाव

पेल्यां रा सरपंचा री वातांई ओर ही। पैतीस- चालीस साल पेल्या जदी गांव रा मनख कम भणियोड़ा, होशियार कम हा, आवा-जावा रा साधन कोनी हां, अखबार नी आवता, टी.वी. कठे अर मोबाइल रो तो नामोनिशान कोनी हो। गांव में सरेपंच रो पद गणों भारी वेवतो। गांव में सरेपंच साहब के माथा पे साफो अर मोटी मूंछा वेवती, पुराणा लोग केवे-

कुंचा बिना री कामणी, मूंछा बिना जवान ।
ये तीनों फीका लागे, बिना सुपारी पान ।।

सरेपंच गांव को कर्ताधर्ता वेवतो। सरपंच छावतां जीने गुनहगार वेता दका वचा लेता, दुजूं राई को पहाड़ वणा देता। वणारे आगे-पाछे जी हजूरियां री फौज चालती, पटवारी, सचिव हुकम में हाजिर रेवतां। सरपंच जी केवता वो पूरो गांव मानतो, वणारां केवाऊं दन उगतो ओर आथतों।

गांव वाळां वणारी हां में हां मलावता, सरेपंच जी पूछतां अरे पाड़ो व्यायो, थां देख्यो कई ?

मनख केवता हां हजूर खुरियां तो मा खेंचियां, दूजो केवतो मुणी (पाड़ी) काठियावाड़ी वी।

वो जमानों ओर हो, सरेपंचां रा तो घर भरता जो भरता पण लारे हाळियां- नवाळयां पोमाया फरतां, चाय वचे केटलियां गणी गरम वेवती, कणी रे फायदों कराणो, बिलानाम जमीन पे कब्जों करावणों, मनख वायरों देख न तवायो माण्ड देता, जी हजूरी पूरी करता, भसवाडियां लोगा ने फायदों पूरों देणु पड़तो, केवे नागा री नौ पांती अर सैणां री एक पांती। भोळां मनख सरेपंच रे भड़ेई नी जावतां, केवता कमाई करम की, इज्जत भरम की, लुगाई शरम की बढ़िया रेवे।

पाछा जदी सरेपंचां रा चुणाव आवता तो मनखां रा भाव वद जाता। राबड़ी केवे- म्हनै दांता सूं खावों। पेल्यां आरक्षण रो लफड़ो हो कोनी, पाछा वेईस ऊबा वेवता वणारी जड़ा जमी दकी गणी ही, छोटा- मोटा कोई हिम्मत करता तोई वाने पूग नी सकता, वे सरपंच तो पुराणा पापी हा। साम, दाम, दण्ड, भेद, सब जाणता। कठी प्रेम सूं वोट मांगता तो कठी पागड़ी मेल देता, करगेंटियां ज्यूं रंग बदलनू, माफी मांगणी, भाई दादा करीन काम काड लेता, नोट वांट न रातुं रात पासां पलट जावता। पुराणा पाछा जीत जाता, बकरा री मां कतरा थावर टाळे, मनखां रे काम तो वणाऊंस पड़तो, पाछा जाय न जी हजूरी करता। मीनी पूळों मीनी झाळ, कई करें, सरेपंच जी के सब लाडु की कोर, कुण खारो कुण मीठो, सबने पाछा लपाय लेता, फेरई कोई डोपर करता तो सरेपंच रे कई फरक पड़े, सती श्राप देवे कोनी अर छिनाल रो श्राप लागे कोनी।

वे वाता ओर ही, आज जमानो बदल ग्यो, राई रा भाव रात ऊं ग्या। लोग हमझदार वेग्या, भण्या- पढ़ग्या अबे वे वातां नी री। ज्यांका मरग्या बादशा रुळता फरे वजीर। उतरी सींगासणां मंदर रा पाछे। आजकाल रीप्यां की खीर, पैसा वाळां लोग गणा वेग्या, छोटा-मोटा के वश की वात नी, जठे हाथी तुले वठे गदेड़ा कांणम में जावे। सरेपंच रो चुणाव हीदा- हादा मनखां रो काम नी रीयो, हुरां रे लारे हांटा नी भांगणां, इणमें छावे बगला। भगत एकपटी और बदमाश लोग, अबे वें वातां नी री, जमानों बदल ग्यो। भोळा- भाळा रो काम अबे नी रियो, गणा जणा रे मन में सरपंची रा लाडु फूट रिया, पण मन में भावे मुंड़ हलावे। सब गुणतारां में लागी रिया, देवरे- देवरे जा अर पूछा करारियां, आकां- पाती खारियां, पाती मांग रिया, बोलमां करिया, म्यांऊ रो भाग रो छींकों टुट जावे तो पांच हीं आंगळियां घी में रेवेलां। जनता जनार्द्धन दोई हाथां सूं माल हमेटवां ने तैयार बैठी है, जो कोई अठे देवा ने आई सब री मनुवार राखणी पड़ेला कणिने नाराज करे, वोट तो देणु वेई वणीने परो देती। कणिरे किस्मत में या सरपंचाई लिखी है। हाउचेत रिजो। ठाई कोनी पड़ री यो ऊंट कणी करवट बैठेलां।

रामगोपाल आचार्य
पीपली आचार्यान
9929215040

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा, मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205, 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

"SHREE" Tension®

SHOWROOM

Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt

शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास

100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)

Mob. 8769955630, 7230059101

धमाका ऑफर

लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....

ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में

ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

An ISO -9001:2015

M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL IT shapes future (Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

C.F.A (Tally)

पूर्ण व्यवसायिक कोर्स

SHINE

GST/Tally ERP

RS-CIT | Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स | DCA | PGDCA | PDCA | Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469

शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

कन्हैयालाल पगारिया

श्रीनाथ ट्रेडिंग कम्पनी
श्रीनाथ इलेक्ट्रोप्लाजा

सतीश पगारिया

श्रीनाथ इलेक्ट्रोविजन

(किचन, होम एवं इलेक्ट्रोनिक्स एप्लाईजेस) हॉलसेल व रिटेल विक्रेता

एक ही छत के नीचे घरेलु सामान की विशाल रेन्ज

0% ब्याज पर उपलब्ध

विवाह पैकेज लेने पर विशेष छूट

एक्सचेंज सुविधा

- पंखा - छत पंखा, टेबल पंखा, वॉलफेन, पेडस्टल फेन
- इनडेक्शन चुल्हा - (इलेक्ट्रीक गैस चुल्हा)
- L.E.D. 3D, T.V. टी.वी.
- फ्रीज, डी फ्रीज, वाटर कुलर
- वॉशिंग मशीनें
- सिलाई मशीन - पेरदान
- अटेचियां - बिफ्रकेस
- ट्रोली बैग
- स्कूल, कॉलेज, ऑफिस बैग
- गैस चुल्हा
- रूम कुलर
- प्रेस
- मिक्सर
- जुसर
- जुसर, मिक्सर ग्राईन्डर
- हैंड मिक्सर
- हैयर ड्रायर
- वाटर प्युरिफायर आर.ओ.
- म्युजिक सिस्टम
- हैडफोन - ईयर फोन
- किचन चिमनी
- कोफी मेकर
- होमथियेटर
- इलेक्ट्रीक केटल
- ईमरजेंसी लाईट
- माइक्रोवेब
- चोपर
- बर्तन सेट
- रोटी/खांखरा मेकर
- सेन्डवीज टोस्टर
- हैण्ड मिक्सर
- राईस कुकर
- वाटर बोतल
- एयरकंडिशनर (ए.सी.)
- वॉशिंग मशीन
- फुड प्रोसेसर
- पापअप टोसटर
- बीटर
- मोप मशीन
- प्रेशर जुसर
- हैयर स्टेनर
- हैयर कलर
- सारेगामां कारवां
- ब्लु टूथ स्पीकर
- गीजर
- किचन फैन
- गिफ्ट आईटम

द्वारकेश चौराहा, स्टेशन रोड, द्वारकेश वाटीका के सामने, पंजाब नेशनल से आगे कांकरोली

संपर्क 9414874111, 9468578444, 7014606851

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To